سُورَةُ الأَنبِيَاءِ

सूरतुल अम्बिया-२१

सूर: [illegible] मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें एक सौ बारह आयतें तथा सात रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है।

اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُعْرِضُونَ ①

(१) लोगों के हिसाब का समय निकट आ गया है,[1] फिर भी वे अचेत (अवस्था में) मुख फेरे हुए हैं।[2]

مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُحْدَثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ②

(२) उनके पास उनके प्रभु की ओर से जो भी नई-नई शिक्षायें आती हैं, उसे वे खेलकूद में ही सुनते हैं।[3]

لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ ۗ وَأَسَرُّوا النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ هَلْ هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ

(३) उनके हृदय पूर्णत: निश्चेत हैं तथा उन अत्याचारियों ने चुपके-चुपके काना-फूसीयाँ कीं कि वह तुम ही जैसा मानव पुरूष है,

---

[1]हिसाब के समय का अर्थ प्रलय है, जो प्रत्येक क्षण निकट हो रहा है, तथा प्रत्येक वह वस्तु जो आने वाली है निकट है, प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु स्वयं उसके लिए प्रलय है। इसके अतिरिक्त व्यतीत हुए समय की अपेक्षा प्रलय निकट है क्योंकि जितना समय व्यतीत हो चुका, शेष रहने वाला समय उससे कम है।

[2]अर्थात उसकी तैयारी से निश्चिन्त, माया-मोह में लिप्त तथा ईमान की अभियाचनाओं से अचेत हैं।

[3]अर्थात क़ुरआन जो समय-समय पर स्थितियों तथा आवश्यकताओं के अनुरूप नया-नया अवतरित होता रहता है, वह यद्यपि उन्हीं की शिक्षा के लिए अवतरित होता है, परन्तु वे उसे इस प्रकार सुनते हैं, मानो वह उससे उपहास एवं खेल कर रहे हों, अर्थात उसमें चिन्तन, ध्यान तथा विचार नहीं करते।

مِّثْلُكُمْ ۚ أَفَتَأْتُونَ السِّحْرَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ③

फिर क्या कारण है जो तुम आँखों देखे जादू में फँस जाते हो ।[1]

قُلَ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ④

(४) (पैग़म्बर ने) कहा, मेरा प्रभु प्रत्येक बात को जो आकाश एवं धरती में है, भली प्रकार से जानता है, वह अति सुनने वाला तथा जानने वाला है ।[2]

بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلِ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ⑤

(५) (इतना ही नहीं) बल्कि यह तो कहते हैं कि यह क़ुरआन काल्पनिक स्वप्नों का संग्रह है, बल्कि उसने स्वयं इसे गढ़ लिया है, बल्कि यह कवि है,[3] वरन हमारे समक्ष यह कोई ऐसी निशानी लाते जैसे कि पूर्व कालिक पैग़म्बर भेज गये थे ।[4]

---

[1]अर्थात नबी का मानव पुरूष होना वे स्वीकार नहीं कर सकते, फिर भी यह कहते हैं कि तुम देख नहीं रहे कि यह जादूगर है, तुम उसके जादू को देखते-भालते क्यों फँसते हो ?

[2]वह प्रत्येक भक्त की बातें सुनता है तथा सभी के कर्मों को भली प्रकार से जानता है, तुम जो झूठ बकते हो उसे सुन रहा है तथा मेरी सत्यता को एवं जो संदेश तुम्हें दे रहा हूँ, उसकी यर्थाता से भली प्रकार परिचित है ।

[3]इन कानाफूसी करने वाले अत्याचारियों ने इसी पर बस नहीं किया, अपितु यह भी कहा कि यह क़ुरआन तो उल्झे स्वप्नों की तरह गंदे विचारों का संग्रह है, बल्कि उसकी अपनी कृति है, बल्कि यह कवि है, तथा क़ुरआन मार्गदर्शक किताब नहीं, कविता है । अर्थात उनको किसी एक बात पर संतोष नहीं है । प्रतिदिन एक नयी चाल चलते तथा नये-नये आक्षेप लगाते हैं ।

[4]अर्थात जिस प्रकार समूद के लिए ऊँटनी, मूसा के लिए छड़ी तथा उनका उज्जवल प्रकाशित हाथ आदि ।

مَا آمَنَتْ قَبْلَهُم مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا ۖ أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

(६) इनसे पूर्व जितनी बस्तियाँ हमने ध्वस्त कीं ईमान से वंचित थीं, तो क्या अब यह ईमान लायेंगे ?[1]

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ ۖ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧﴾

(७) तुमसे पूर्व भी जितने पैग़म्बर हमने भेजे सभी मानव पुरूष थे,[2] जिन की ओर हम प्रकाशना (वह्यी) अवतरित करते थे, तो तुम ज्ञान[3] वालों से पूछ लो यदि स्वयं तुम्हें ज्ञान न हो।

---

[1]अर्थात उन से पूर्व हम ने जितनी बस्तियाँ नाश कीं यह नहीं हुआ कि उन्होंने अपनी इच्छानुसार चमत्कार देखने के पश्चात ईमान ले आयी हों, बल्कि चमत्कार देख लेने के पश्चात भी ईमान नहीं लायीं जिसके कारण उनका विनाश उनका भाग्य बन गया। तो क्या मक्का वासियों को उनकी इच्छानुसार कोई चमत्कार दिखा दिया जाये तो वे ईमान ले आयेंगे ? कदापि नहीं, यह फिर भी अविश्वास एवं विरोधी मार्ग पर उसी प्रकार अग्रसर रहेंगे।

[2]अर्थात सभी नबी पुरूष थे, न कोई मानव जाति के अतिरिक्त कोई नबी आया, तथा न कोई पुरूष के अतिरिक्त, अर्थात नबूअत मनुष्यों के साथ तथा मनुष्यों में पुरूषों के साथ विशेष रूप से रही है। इससे ज्ञात हुआ कि कोई महिला नबी नहीं हुई, इसलिए कि नबूअत भी उन कर्तव्यों में से है, जो महिला के भौतिक तथा प्राकृतिक कर्मों की परिधि से बाहर है।

[3]अहले ज़िक्र (ज्ञानी लोग) से तात्पर्य किताब वाले लोग हैं, जो पूर्व की आकाशीय पुस्तकों का ज्ञान रखते थे, उनसे पूछ लो कि पूर्व कालिक नबियों में जो गुज़र चुके हैं, वह मनुष्य थे अथवा अन्य ? वे तुम्हें बतायेंगे कि सभी मनुष्य थे। इससे कुछ लोग "अनुकरण (तक़्लीद)" का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, जो उचित नहीं। "अनुकरणवाद" में क्या होता है ? केवल एक विशेष व्यक्ति तथा उससे सम्बन्धित एक निर्धारित चिन्तन को मूल बनाया जाये तथा उसी के अनुसार कार्य किया जाये। दूसरा यह कि बिना किसी प्रमाण के उसकी बात को स्वीकार कर लिया जाये। जबकि आयत में "अहले ज़िक्र" से अर्थ कोई विशेष व्यक्ति नहीं है, बल्कि प्रत्येक ज्ञानी है, जो तौरात तथा इंजील (बाईबिल) का ज्ञान रखता था। इससे व्यक्तिगत अनुकरण का खन्डन होता है ? इसमें तो ज्ञानियों से पूछने को कहा गया है, जो सर्वसाधारण के लिए अनिवार्य है, जिससे किसी को इंकार नहीं हो सकता, न किसी एक व्यक्ति के दामन को पकड़ लेने का आदेश। इसके अतिरिक्त तौरात तथा इंजील आकाशीय पुस्तकें थीं अथवा किसी

(८) तथा हमने उन्हें ऐसे शरीर न बनाये कि वे भोजन न करें तथा न वह सदा जीवित रहने वाले थे ।[1]	وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨
(९) फिर हमने उनसे किये हुए सभी वचन सत्य कर दिखाये, उन्हें तथा जिन-जिन को हमने चाहा मुक्ति प्रदान की तथा सीमा उल्लंघन करने वालों का विनाश कर दिया ।[2]	ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَاۤءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩
(१०) नि:संदेह हम ने तुम्हारी ओर किताब अवतरित की है, जिसमें तुम्हारे लिए शिक्षा है । क्या फिर भी तुम बुद्धि का प्रयोग नहीं करते ?	لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠
(११) तथा बहुत सी बस्तियाँ हमने ध्वस्त कर दीं,[3] जो अत्याचारी थीं तथा उनके पश्चात हम ने अन्य समुदाय पैदा किये ।	وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١

व्यक्ति के अपने विचार ? यदि तौरात तथा इंजील आकाशीय पुस्तकें थीं, तो अर्थ यह हुआ कि ज्ञानियों के द्वारा आकाशीय पुस्तकों के नियम ज्ञात करें, जो आयत का उचित अर्थ है । तथा यदि वह किसी एक विशेष व्यक्ति, गुरू, तथा उसके शिष्यों के उपदेश की संग्रह थी तो फिर अवश्य वैचारिक (फ़िक़्ही) अनुकरणवाद (तक़्लीद) का भावार्थ इस आयत से निकल आता है, परन्तु क्या आकाशीय पुस्तकें तथा मनुष्यों द्वारा रचित वैचारिक पुस्तकें, दोनों एक ही स्थान ग्रहण करने के योग्य हैं ?

[1]बल्कि वे भोजन भी करते थे तथा मृत्यु का स्वाद चख कर चिरस्थायी लोक को भी गये । ये नबियों के मनुष्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

[2]अर्थात वचन के अनुसार नबियों को तथा ईमान वालों को मोक्ष प्रदान की तथा सीमा उल्लंघन करने वाले नास्तिकों (काफ़िरों) तथा मूर्तिपूजकों को हमने नाश कर दिया ।

[3] قَصَمْ का अर्थ है तोड़-फोड़ कर रख देना तथा كَمْ अधिकता वाची रूप है, अर्थात बहुत सी बस्तियों को हमने ध्वस्त कर दिया, तोड़-फोड़ कर रख दिया, जिस प्रकार अन्य स्थान पर कहा गया है कि "नूह के समुदाय के पश्चात कितनी ही बस्तियों को हमने नाश कर दिया ।" (सूर: *बनी-इस्राईल-१७*)

فَلَمَّآ أَحَسُّوا۟ بَأْسَنَآ إِذَا هُم مِّنْهَا يَرْكُضُونَ ﴿١٢﴾

(१२) जब उन लोगों ने हमारे प्रकोप का संवेदन कर लिया, तो उससे (प्रकोप से) भागने लगे ।[1]

لَا تَرْكُضُوا۟ وَٱرْجِعُوٓا۟ إِلَىٰ مَآ أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسَٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُونَ ﴿١٣﴾

(१३) भाग-दौड़ न करो [2] तथा जहाँ तुम्हें सुख प्रदान किया गया था, वहीं वापस लौटो तथा अपने घरों की ओर जाओ,[3] ताकि तुमसे प्रश्न तो कर लिया जाये ।[4]

قَالُوا۟ يَٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿١٤﴾

(१४) वे कहने लगे हमारा बुरा हो वस्तुतः हम अत्याचारी थे ।

فَمَا زَالَت تِّلْكَ دَعْوَىٰهُمْ حَتَّىٰ

(१५) फिर तो उनका यही कथन रहा,[5] यहाँ तक कि हमने उन्हें जड़ से कटी हुई खेती तथा

---

[1]संवेदन का अर्थ ज्ञान इन्द्रियों से जानना । अर्थात जब उन्होंने प्रकोप अथवा उसके लक्षणों को आते हुए आँखों से देख लिया, अथवा कड़क, गर्जन सुनकर ज्ञात कर लिया, तो उससे बचने के लिए भागने का मार्ग ढूँढ़ने लगे । ركض का अर्थ है आदमी का घोड़े आदि पर बैठ कर उसको दौड़ाने के लिए ऐड़ लगाना । यहीं से ये भागने के अर्थ में प्रयोग होने लगा ।

[2]यह फ़रिश्तों ने आकाशवाणी की अथवा ईमानवालों ने हँसकर कहा ।

[3]अर्थात जो सुख तथा सुविधायें तुम्हें प्राप्त थीं, जो तुम्हारे अविश्वास एवं अत्याचार का कारण थीं तथा वे घर जिन में तुम रहते थे, जिन की सुन्दरता एवं सुदृढ़ता पर तुम्हें गर्व था उनकी ओर पल्टो ।

[4]तथा प्रकोप के पश्चात तुम्हारा समाचार तो पूछ लिया जाये कि तुम पर यह क्या बीती ? किस प्रकार बीती तथा क्यों बीती ? यह प्रश्न उपहास स्वरूप पूछे गये हैं, वरन विनाश के शिकंजे में कसे जाने के पश्चात वह उत्तर देने के योग्य ही कब रहते थे ?

[5]अर्थात जब तक जीवन के लक्षण उनके अन्दर रहे, वे अपने अत्याचार को स्वीकार करते रहे ।

جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ⑮

बुझी पड़ी अग्नि (की भाँति) कर दिया ।[1]

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاۗءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ⑯

(१६) हमने आकाश तथा धरती एवं उनके मध्य की वस्तुओं को कुछ आमोद-प्रमोद के लिए नहीं बनाया ।[2]

لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ڰ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ⑰

(१७) यदि हम इसी प्रकार क्रीड़ा खेल चाहते तो उसे अपने पास से ही बना लेते,[3] यदि हम ऐसा करने वाले ही होते ।[4]

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ

(१८) अपितु हम सत्य को झूठ पर फेंक मारते हैं, तो सत्य, असत्य का सिर तोड़ देता है तथा वह उसी समय ध्वस्त हो जाता है ।[5] तुम

---

[1] حَصِيْدٌ कटी हुई खेती तथा خُمُوْدٌ अग्नि के बुझ जाने को कहते हैं । अन्ततः वे कटी हुई खेती की भाँति हो गये तथा बुझी हुई अग्नि की भाँति राख का ढेर हो गये, कोई शक्ति, बल तथा संवेदन उनके अन्दर न रही ।

[2] बल्कि उसके कई उद्देश्य तथा कारण है, जैसे भक्त मेरी महिमा का वर्णन तथा कृतज्ञता करें, पुण्य कार्य करने वालों को उनकी भलाईयों का बदला तथा बुरों को बुराई का दण्ड दिया जाये आदि ।

[3] अर्थात अपने पास ही कुछ चीज़ें खेल के लिए बना लेते और अपनी अभिलाषा पूरी कर लेते । इतने विशाल विश्व ब्रह्माण्ड को बनाकर और फिर उसमें सुधी-बुद्धि रखने वाले प्राणी को बनाने की क्या आवश्यकता थी ?

[4] इसके दूसरे अनुवाद "हम करने वाले ही नहीं" से "यदि हम करने वाले ही होते" अरबी भाषा के अनुसार अधिक उपयुक्त है ।

[5] अर्थात दुनिया को बनाने के उद्देश्यों में से एक महत्वपूर्ण विशेष उद्देश्य यह है कि सत्य और असत्य के बीच जो द्वन्द है और भलाई और बुराई के बीच जो लड़ाई है, उसमें सत्य और भलाई को विजय प्राप्त कराकर असत्य और बुराई पर काबू रखें । अर्थात हम सत्य को असत्य पर और अच्छाई को बुराई पर मारते हैं, जिससे असत्य और बुराई समाप्त हो जाये । دَمْغٌ सिर की ऐसी चोट को कहते हैं, जो दिमाग़ तक पहुँच जाये । زُهُوْقٌ के अर्थ हैं समाप्त, नष्ट अथवा मर जाना ।

وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ⑱

जो बातें बनाते हो, वे तुम्हारे लिए विनाशकारी है ।[1]

وَلَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَنْ عِندَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ⑲

(१९) तथा आकाशों एवं धरती में जो कुछ है, उसी (अल्लाह) का है ।[2] तथा जो उसके पास हैं[3] वे उसकी इबादत से न अहंकार करते तथा न थकते हैं ।

يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ⑳

(२०) वे दिन-रात उसकी पवित्रता का वर्णन करते हैं, तथा तनिक भी आलस्य नहीं करते ।

أَمِ اتَّخَذُوا آلِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ ㉑

(२१) उन लोगों ने धरती (की सृष्टि में) से जिन्हें पूज्य बना रखा है, क्या वह जीवित कर देते हैं ?[4]

---

[1]अर्थात प्रभु की ओर जो इस प्रकार की बे सिर-पैर की बातें सम्बन्धित करते हो अथवा उसके विषय में उत्पन्न करते हो (उदाहरत: यह जीवन एक खेल है, एक खिलाड़ी का बेकार शौक है, आदि), यह तुम्हारे विनाश का कारण है, क्योंकि खेल-तमाशा समझने के कारण तुम सत्य से दूर चले गये और असत्य को अपनाने में कोई चिन्ता और डर का आभास भी नहीं करते जिसका अन्तिम परिणाम तुम्हारा विनाश एवं बरबादी ही है ।

[2]सब उसी के अधीन और उसी के दास हैं । जब तुम किसी दास को अपना पुत्र और किसी दासी को अपनी पत्नी बनाने के लिए तैयार नहीं होते, फिर अल्लाह तआला अपने अधीनस्थ और दासों में से कुछ को पुत्र और कुछ को पत्नी किस प्रकार बना सकता है ?

[3]इससे अभिप्राय फ़रिश्ते हैं, वे भी अल्लाह के दास और भक्त हैं । इन शब्दों से उनकी प्रतिष्ठा तथा सम्मान प्रदर्शित होती है कि वे अल्लाह के समीपस्थ हैं । उसकी (अल्लाह की) पुत्रियाँ नहीं हैं, जैसाकि मुशरिक लोगों का विश्वास (अक़ीदा) था ।

[4] استفهام (प्रश्न) इंकार के लिए है, अर्थात नहीं कर सकते, फिर वह उनको जो किसी प्रकार की शक्ति नहीं रखते, अल्लाह का साझी क्यों बनाते हैं, और उनकी इबादत (आराधना) क्यों करते हैं ?

لَوْ كَانَ فِيهِمَآ ءَالِهَةٌ إِلَّا ٱللَّهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحَٰنَ ٱللَّهِ رَبِّ ٱلْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) यदि आकाश तथा धरती में अल्लाह के अतिरिक्त अन्य भी पूज्य होते तो यह दोनों उलट-पलट हो जाते।[1] बस अल्लाह अर्श का प्रभु प्रत्येक उस गुण से शुद्ध है, जो ये मूर्तिपूजक वर्णन करते हैं।

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) वह अपने कार्यों के लिए (किसी के समक्ष) उत्तरदायी नहीं तथा सभी (उसके समक्ष) उत्तरदायी हैं।

أَمِ ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوا۟ بُرْهَٰنَكُمْ ۖ هَٰذَا ذِكْرُ مَن مَّعِىَ وَذِكْرُ مَن قَبْلِى ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٱلْحَقَّ ۖ فَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾

(२४) क्या उन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त अन्य आराध्य बना रखे हैं उनसे कह दो, लाओ अपना प्रमाण प्रस्तुत करो। यह है मेरे साथ वालों की पुस्तक तथा मुझसे पूर्व वालों का प्रमाण।[2] बात यह है कि उनमें अधिकाँश सत्यता से अनभिज्ञ हैं, इसी कारण विमुख हैं।

---

[1]अर्थात यदि वास्तव में आकाश और धरती के दो ईश्वर होते तो इस विश्व के अधिकारी दो शक्तियाँ होतीं, दो का विचार, बुद्धि तथा इच्छा कार्य करती और जब दो की इच्छा और निर्णय विश्व में चलता तो यह विश्व की व्यवस्था रह ही नहीं सकती थी, जो आदि से बिना बाधा के चला आ रहा है। क्योंकि दोनों की इच्छा में परस्पर टकराव होता तथा दोनों की चाहत एक-दूसरे के विपरीत दिशा में प्रयोग होती, जिसका परिणाम बिखराव और विनाश के रूप में उत्पन्न होता, और अब तक ऐसा नहीं हुआ, तो इसका साफ अर्थ यह है कि विश्व में केवल एक ही शक्ति है, जिसकी इच्छा और आदेश चलता है, जो कुछ भी होता है, सिर्फ उसी के आदेश पर होता है। उसके दिये हुए को कोई रोक नहीं सकता और जिससे वह अपनी दया रोक ले, उसको देने वाला कोई नहीं।

[2] ذكر من معي से क़ुरआन और दूसरे ذكر से पहले की आसमानी किताबें तात्पर्य हैं। अर्थात क़ुरआन और उससे पहले की अन्य आसमानी किताबों में, केवल एक प्रभु के पूज्य एवं पालनहार होने का वर्णन मिलता है, परन्तु यह मुशरिक लोग इस सत्य को नहीं स्वीकार करते और यथापूर्वक इस एकेश्वरवाद से मुहँ मोड़े हुए हैं।

(२५) और हमने तुम से पहले जो रसूल (संदेशवाहक) भी भेजा उसकी ओर यही वह्यी (ईशवाणी) अवतरित (नाज़िल) की कि मेरे अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं, तो तुम सब मेरी ही इबादत (उपासना) करो ।[1]

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِىٓ إِلَيْهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾

(२६) और (मिश्रणवादी) कहते हैं रहमान (कृपालु) की औलादें हैं (ग़लत है) वह पवित्र है । वरन वे (जिन्हें ये पुत्र समझ रहे हैं) उसके सम्मानित भक्त हैं ।

وَقَالُوا ٱتَّخَذَ ٱلرَّحْمَٰنُ وَلَدًا ۗ سُبْحَٰنَهُۥ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾

(२७) उसके (अल्लाह के) समक्ष बढ़कर नहीं बोलते, और उसके आदेशों पर कार्यरत हैं ।[2]

لَا يَسْبِقُونَهُۥ بِٱلْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِۦ يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

(२८) वह उनके पूर्व तथा पश्चात की सभी स्थितियों से अवगत है, और वे किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करते सिवाय उसके जिससे वह (अल्लाह) प्रसन्न हो ।[3] वे तो स्वयं कंपित तथा भयभीत रहते हैं ।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ٱرْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِۦ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾

(२९) और उन में से कोई कह दे कि अल्लाह के अतिरिक्त मैं इलाह (पूजनीय) हूँ, तो हम

وَمَن يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّىٓ إِلَٰهٌ مِّن دُونِهِۦ فَذَٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ

---

[1]अर्थात सभी पैग़म्बर यही अल्लाह के एक होने का संदेश लेकर आये ।

[2]इसमें मुशरिकों के विचारों का खण्डन होता है, जो फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहा करते थे, वह पुत्रियाँ नहीं हैं, उसके सम्मानित बन्दे (फ़रिश्ते) और उसके आज्ञाकारी हैं ।

[3]इससे विदित हुआ कि नबियों और पुनीत लोगों (स्वालेह लोग) के अतिरिक्त फ़रिश्ते भी सिफ़ारिश करेंगे । सही हदीस से भी इसका समर्थन मिलता है । परन्तु यह सिफ़ारिशें उन्हीं के प्रति होंगी जिनके लिए अल्लाह तआला चाहेगा । तथा प्रत्यक्ष बात है कि अल्लाह तआला यह सिफ़ारिश अपने अवज्ञाकारी भक्तों के लिए नहीं, अपितु केवल पापी परन्तु आज्ञाकारी लोगों अर्थात ईमान वालों व एकेश्वरवादियों के लिए पसन्द फ़रमायेगा ।

كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝٢٩

उसे नरक का दण्ड दें ।[1] हम अत्याचारियों को इसी प्रकार दण्ड देते हैं ।

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاۗءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۭ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٣٠

(३०) क्या काफ़िरों ने यह नहीं देखा[2] कि (ये) आकाश और धरती (सब के सब) आपस में मिले हुए थे, फिर हमने उन्हें अलग-अलग किया ।[3] और हर जीवित को हमने पानी से पैदा किया ।[4] क्या यह लोग फिर भी विश्वास नहीं करते ?

---

[1]अर्थात इन फ़रिश्तों में से भी कोई ईलाह (पूजनीय) होने का दावा करे, तो उसको भी नरक में फेंक देंगे । यह प्रतिबंधित वाक्य है, जिसका होना आवश्यक नहीं । इससे तात्पर्य शिर्क को नकारना और तौहीद का समर्थन है । जैसे

﴿ قُلْ إِن كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴾

"(हे नबी) कहो, यदि रहमान (कृपाशील) की कोई औलाद हो, तो सबसे पहले मैं उपासना (इबादत) करने वाला हूँगा ।" (सूर: ज़ुख़रुफ़-८१)

﴿ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ ﴾

"(हे नबी) ! यदि तुम ने भी शिर्क किया, तो तेरे सारे कर्म बेकार बरबाद हो जायेंगे ।" (सूर: अल-ज़ुमर-६५)

यह सभी बातें प्रतिबंधित हैं जिनका होना अनावश्यक है ।

[2]इसका अर्थ आँख से देखना नहीं, अपितु दिल की आँखों से देखना है । अर्थात क्या उन्होंने सोच-विचार नहीं किया अथवा उन्होंने जाना नहीं ?

[3] رَتْقٌ के अर्थ है बन्द और فَتْقٌ का अर्थ है फाड़ना, खोलना अलग-अलग करना । अर्थात आकाश और धरती आदिकाल में आपस में एक-दूसरे से एक साथ मिले हुए थे । हमने उनको एक-दूसरे से अलग किया । आकाश को ऊपर कर दिया, जिससे वर्षा होती है, और धरती को अपनी जगह पर रहने दिया, और वह पैदावार के योग्य हो गयी ।

[4]इसका अर्थ वर्षा और स्रोतों के पानी है । तब भी स्पष्ट रहे कि इससे तरावट होती है और हर जीवित को नवजीवन देता है और यदि इसका अर्थ वीर्य है, तो इसमें भी कोई कठिनाई नहीं, क्योंकि हर जीवित के अस्तित्व का कारण वह पानी की बूंदें है, जो पुरुष की पीठ से निकलता है और स्त्री के गर्भाशय में जाकर एक नये प्राणी को जन्म देने का कारण बनता है ।

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾

(३१) और हम ने धरती पर पर्वत बना दिये, ताकि वह सृष्टि को हिला न सके।[1] और हमने इसमें उनके बीच विस्तृत मार्ग बना दिये[2] ताकि वह मार्ग प्राप्त कर सकें।

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) और आकाश को हमने एक सुरक्षित छत बनाया है।[3] परन्तु वह लोग उसकी निशानियों पर ध्यान नहीं देते।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ

(३३) और वही (अल्लाह) है जिसने रात और दिन एवं सूर्य और चाँद को बनाया।[4] उनमें

---

[1]अर्थात यदि धरती पर यह बड़े-बड़े पहाड़ न होते, धरती सदैव हिलती-डुलती रहती, जिसके कारण सभी जीव-जन्तु के लिए इस धरती पर घर और रास्ते न बन सकते। हमने धरती पर पहाड़ों की माला रखकर इसे कम्पन से रोक दिया।

[2]इसका अर्थ धरती अथवा पहाड़ है। अर्थात धरती पर चौड़े-चौड़े रास्ते बना दिये अथवा पर्वतमाला के बीच घाटी बनाकर धरती के दूसरे भाग में जाने के लिए मार्ग बनाये। يهتدون का एक दूसरा भावार्थ यह भी हो सकता है कि वह इन मार्गों से यात्रा करके अपने जीवनयापन व्यवस्था अथवा आवश्यकतायें पूरी कर सकें।

[3] سقفا محفوظاً धरती के लिए सुरक्षित छत जिस प्रकार से टेन्ट और कुब्बे की छत होती है। अथवा इन अर्थों में सुरक्षित कि उसको धरती पर गिरने से रोक रखा है, वरन यदि आकाश धरती पर गिर जाये, तो धरती का सारा नियम अस्त-व्यस्त हो सकता है। अथवा शैतानों से सुरक्षित। जैसाकि सूर: *अल-हिज्र* की आयत संख्या १७ में फ़रमाया :

﴿وَحَفِظْنَاهَا مِن كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ﴾

"तथा उसे हमने प्रत्येक धिक्कारे शैतान से सुरक्षित किया।"

[4]अर्थात रात को आराम और दिन को काम के लिए बनाया, सूरज को दिन की निशानी और चांद को रात की निशानी बनाया, ताकि महीनों और सालों का हिसाब लगाया जा सके, जो मनुष्य के लिए विशेष आवश्यकता है।

كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

से सभी अपने-अपने कक्ष में तैर रहे हैं ।[1]

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّن قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِن مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) और आपसे पहले हमने किसी भी व्यक्ति को नित्यता, नहीं दी । फिर क्या यदि आप मर गये, तो यह सदा के लिए रह जायेंगे ?[2]

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) हर जीव को मौत का स्वाद चखना है । और हम परीक्षा के लिए तुम्हें बुराई-भलाई में डालते हैं ।[3] और तुम सब हमारी तरफ पलटकर आओगे ।[4]

وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا

(३६) और जिन लोगों ने कुफ़्र (अविश्वास) किया, वे जब तुमको देखते हैं, तो बस

---

[1]जिस प्रकार से तैरने वाला जल के तल पर तैरता है, उसी प्रकार से चाँद और सूरज अपने कक्ष में अपनी निर्धारित गति से गतिमान हैं ।

[2]यह काफ़िरों के उत्तर में है जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में कहते थे कि एक दिन आप को मर ही जाना है । अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मृत्यु तो हर व्यक्ति को आनी ही है और इसके अनुसार अवश्य मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इस नियम से अलग नहीं । क्योंकि वह भी इंसान ही हैं, और हमने किसी मनुष्य को सदैव के लिए इस धरती पर जीवित रहने के लिए नहीं छोड़ दिया है । इसका अर्थ यह तो नहीं कि क्या यह बात कहने वाले इस धरती पर जीवित रहेंगे ? इससे मूर्तिपूजकों और क़ब्र पूजने वालों का भी खण्डन हो गया, जो देवताओं, नबियों, महापुरूषों के सदैव जीवित रहने का भ्रम रखते हैं, इसी आधार पर उनको अपना दुखहारी, संकटमोचन समझते हैं । इस त्रुटिपूर्ण भ्रम से हम अल्लाह की शरण चाहते हैं ।

[3]अर्थात कभी दुख-दर्द में घेरकर, कभी साँसारिक सुविधा से, कभी स्वास्थ्य तथा वैभव से, कभी तंगी, बीमारी से, कभी धन-दौलत देकर, कभी भूख-प्यास देकर, हम परीक्षा लेते हैं कि हम देखें कि कौन फिर भी कृतज्ञ है और कौन नाशुकरा (कृतघ्न) ? कौन धैर्य रखता है और कौन सहन नहीं करता ? धन्य और धैर्य (शुक्र व सब्र) प्रभु (इलाही) को प्रसन्न करने वाले हैं और कृतघ्नता और अधैर्य उस प्रभु के प्रकोप का कारण है ।

[4]वहाँ पर तुम्हारे कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा, उपरोक्त लोगों के लिए भलाई और शेष के लिए बुराई है ।

إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۖ أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُم بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٦﴾

तुम्हारी हँसी उड़ाते हैं, (कहते हैं) कि क्या यही वह है जो तुम्हारे देवताओं (पूज्यों) की चर्चा बुराई से करता है ? और वह स्वयं ही रहमान (कृपालु) की महिमा (स्मरण) करने से इंकार करते हैं ।[1]

خُلِقَ الْإِنسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُرِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾

(३७) मनुष्य जन्मजात उतावला है । मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ (लक्षण) जल्द ही दिखाऊँगा, तुम मुझसे जल्दी न करो ।[2]

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

(३८) और कहते हैं कि यदि सच्चे हो तो बताओ कि वह वादा (यातना) कब पूरा होगा ।

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَن وُجُوهِهِمُ النَّارَ

(३९) यदि ये काफ़िर जानते कि उस समय न तो ये आग को अपने चेहरों से हटा सकेंगे

---

[1]इसके बाद भी ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हँसी मज़ाक उड़ाते हैं जिस प्रकार दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا﴾

"जब (हे पैग़म्बर !) ये कुफ़्फ़ारे मक्का तुझे देखते हैं, तो तेरा मज़ाक उड़ाने लग जाते हैं, कहते हैं कि यही है वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है ।" *(सूर: अल-फ़ुरक़ान-४१)*

[2]यह काफ़िरों की प्रकोप माँग के उत्तर में है क्योंकि मनुष्य प्राकृतिक रूप से उतावला है और उतावलेपन में वह पैग़म्बर से भी शीघ्र माँग कर बैठते हैं कि अपने अल्लाह से कहकर तुरन्त प्रकोप करवा दो । अल्लाह ने फ़रमाया : "जल्दी मत करो, मैं शीघ्र ही अपनी निशानियाँ दिखाऊँगा । इन निशानियों का अर्थ प्रकोप भी हो सकता है और रसूल की सत्यता के प्रमाण भी ।"

وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝٣٩

और न अपनी पीठों से, और न इन्हें सहायता की जायेगी ।[1]

بَلْ تَأْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝٤٠

(४०) हाँ, अवश्य ही वादा की घड़ी (क़ियामत का दिन) उनके पास अचानक (अकस्मात्) आ जायेगी और उन्हें वह आश्चर्यचकित कर देगी ।[2] फिर न तो यह लोग उसे टाल सकेंगे और न ही उन्हें तनिक भी समय दिया जायेगा ।[3]

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٤١

(४१) और तुमसे पहले रसूलों का भी उपहास किया गया तो जिन्होंने उपहास किया उन्हें ही उस वस्तु ने आ घेरा जिसका वे उपहास करते थे ।[4]

---

[1]इसके अन्दर उत्तर लुप्त है, अर्थात यदि ये जान लेते तो प्रकोप की माँग न करते अथवा अवश्य जान लेते कि प्रलय (क़ियामत) आने वाली है या कुफ़्र पर अड़े न रहते और ईमान ले आते ।

[2]अर्थात उन्हें कुछ समझ में न आयेगा कि वे क्या करें ।

[3]कि वह तौबा (पश्चाताप) इस्तग़फ़ार (क्षमा-याचना) करें ।

[4]रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी जा रही है कि मुश्रेकीन के हँसी-मज़ाक से हताश न हों, यह कोई नई बात नहीं है । तुझसे पहले आने वाले पैग़म्बरों के साथ भी ऐसा ही हुआ है । अन्तत: वही प्रकोप उन पर पलट पड़ा अर्थात उन्हें घेर लिया, जिसका वे मज़ाक उड़ाते थे और जिसका आना उनके विचार से असम्भव था । जिस प्रकार से दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَأُوْذُوْا حَتّٰى أَتٰهُمْ نَصْرُنَا ﴾

"तुझसे पहले भी रसूल झुठलाये गये, परन्तु उन्होंने मज़ाक पर और उन सभी कष्टों पर जो उन्हें दिये गये धैर्य धारण किया, यहाँ तक कि उनके पास हमारी मदद (सहायता) आ गयी ।" (*सूर: अल-अनआम-३४*)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तसल्ली के साथ काफ़िरों के लिए सावधानी एवं चेतावनी भी है ।

قُلْ مَنْ يَكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۗ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) उनसे पूछिये कि रहमान (कृपालू) से रात और दिन तुम्हारी रक्षा कौन कर सकता है ?[1] वरन् यह अपने प्रभु की महिमा (जिक्र) सुमिरन करने से विमुख हैं।

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ۗ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾

(४३) क्या हमारे सिवाय उनके कोई और इलाह (पूजनीय) हैं, जो उन्हें आपदा से बचाते हों ? कोई भी स्वयं अपनी सहायता करने की शक्ति नहीं रखता, और न कोई हमारी ओर से साथ दिया जाता है।[2]

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۗ

(४४) बल्कि हमने इन्हें और इनके पूर्वजों को जीवन सामग्री दी, यहाँ तक कि उनकी आयु की सीमा समाप्त हो गयी।[3] क्या वह नहीं देखते कि हम भूमि को उसके किनारों

---

[1]अर्थात तुम्हारे कर्म ऐसे हैं कि दिन या रात किसी भी समय तुम पर प्रकोप आ सकता है। इस प्रकोप से तुम्हारी दिन-रात कौन रक्षा करता है ? क्या अल्लाह के अतिरिक्त भी कोई और है, जो उसके प्रकोप से तुम्हारी रक्षा कर सके ?

[2]इसका अर्थ है ولاهم يجارون من عذابنا "न वह हमारे प्रकोप से ही सुरक्षित हैं।" अर्थात वह स्वयं अपनी सहायता पर तथा अल्लाह के प्रकोप से बचने की शक्ति नहीं रखते, और फिर उन्हीं की तरह उनकी सहायता क्या होनी है और वह उन्हें प्रकोप से किस प्रकार से वचा सकते हैं ?

[3]अर्थात उनका अथवा उनके पूर्वजों का जीवन सुख-शान्ति से व्यतीत हुआ, तो क्या वह यह समझते हैं कि वह सही रास्ते पर थे और भविष्य में भी उन्हें कुछ नहीं होगा ? नहीं, बल्कि यह क्षणिक जीवन तो हमारे अवसर देने के नियम का एक भाग है, उससे किसी को धोखे में नहीं रहना चाहिए।

أَفَهُمُ الْغَٰلِبُونَ ﴿٤٤﴾

से घटाते चले आ रहे हैं ?[1] तो अब क्या वही विजयी हैं ?[2]

قُلْ إِنَّمَآ أُنذِرُكُم بِٱلْوَحْىِ ۚ وَلَا يَسْمَعُ ٱلصُّمُّ ٱلدُّعَآءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) कह दो कि मैं तो केवल तुम्हें अल्लाह की वह्यी के द्वारा सचेत करता हूँ परन्तु बधिर व्यक्ति पुकार को नहीं सुनते, जबकि उन्हे सचेत किया जा रहा हो।[3]

وَلَئِن مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يَٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿٤٦﴾

(४६) और यदि उन्हें तेरे प्रभु के प्रकोप की भाप भी लग जाये तो पुकार उठे कि हाय हमारा विनाश ! नि:संदेह हम पापी थे।[4]

وَنَضَعُ ٱلْمَوَٰزِينَ ٱلْقِسْطَ لِيَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۖ وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ

(४७) और हम प्रलय के दिन उनके मध्य स्वच्छ तौल की तराजू ला रखेंगे, फिर किसी पर किसी प्रकार का अत्याचार न किया जायेगा, और यदि एक सरसों के दाने के बराबर भी

---

[1]अर्थात कुफ़्र के पैरों तले से धरती खिसक रही है और इस्लाम विजेता के रूप में अग्रसर है और मुसलमान इलाक़े पर इलाक़ा जीतते जा रहे हैं।

[2]अर्थात कुफ़्र को सिमटता और इस्लाम को बढ़ता हुआ देखकर भी, क्या वह काफ़िर यह समझते हैं कि वह विजयी हैं ? इसका उत्तर नकारात्मक ही है। विजयी नहीं पराजित हैं, आदरणीय नहीं अनादर, अनिष्ठ अपमान उनका भाग्य है।

[3]अर्थात क़ुरआन सुनाकर उनको शिक्षा-दीक्षा दे रहा हूँ। और यही मेरी ज़िम्मेदारी और पद है। लेकिन जिनके कानों को अल्लाह ने सत्य सुनने से बहरे कर दिया है, उनकी आँखों पर पर्दा डाल दिया गया है, और दिलों पर मुहर लगा दी गयी है। उन पर इस क़ुरआन की शिक्षा-दीक्षा का तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ता।

[4]अर्थात प्रकोप का एक तनिक सा झटका अथवा थोड़ा सा भाग भी पहुँचेगा, तो पुकार उठेंगे और अपने पापों को स्वयं स्वीकार करने लगेंगे।

(कर्म) होगा, उसे हम सामने लायेंगे। और हम हिसाब करने के लिए काफी हैं।[1]

اٰتَيْنَا بِهَا ۭ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝

(४८) और यह पूर्णरूप से सत्य है कि हमने मूसा और हारून को निर्णयकारी ज्योर्तिमय तथा सदाचारियों के लिए शिक्षाप्रद किताब प्रदान की है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاۗءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝

(४९) वह लोग जो बिन देखे अपने प्रभु से डरते हैं और जो प्रलय के (विचार) से काँपते रहते हैं।

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝

---

[1] ميزان - موازين (तराज़ू) का बहुवचन है। कर्मों को तौलने के लिए क़ियामत के दिन या तो कई तराज़ू होंगी अथवा तराज़ू एक ही होगी, परन्तु उसकी विशेष महत्ता के लिए या कर्मों की संख्या के अनुसार इसे बहुवचन के रूप में प्रयोग किया गया है। मनुष्य के कर्म तो भौतिक नहीं अर्थात इनका प्रत्यक्ष रूप से कोई आकार तो नहीं है, फिर उसको तौला किस प्रकार से जायेगा ? यह प्रश्न आज से पहले तक तो शायद कोई विशेषता रखता था। परन्तु आज के वैज्ञानिक अविष्कार ने इसे सम्भव बना दिया है। अब इन अविष्कारों के द्वारा निराकार और बिना भार की वस्तुओं को भी नापा तौला जाने लगा है। जब मनुष्य यह सामर्थ्य रखता है, तो अल्लाह तआला के लिए उन कर्मों को जो निराकार गुण हैं, तौलना कौन सा कठिन कार्य है। उसकी तो महिमा ही अपार على كل شيئ قدير है। इसके अतिरिक्त यह भी हो सकता है कि वह इन निराकार गुणों को मनुष्य को दिखाने के लिए साकार बना दे और फिर तौले। जैसा कि कुछ हदीसों में कुछ कर्मों के साकार रूप होने के प्रमाण मिलते हैं। उदाहरणत: क़ुरआन को कण्ठस्थ करने वालों के लिए क़ुरआन एक सुन्दर युवक के रूप में आयेगा, वह व्यक्ति प्रश्न करेगा कि तू कौन है ? वह कहेगा कि मैं क़ुरआन हूँ, जिसे तू रातों (रातों को नमाज़ों में) को जागकर और दिन को प्यासा रहकर पढ़ा करता था। (मुसनद अहमद ५\३५२, इब्ने माजा, किताबुल अदब, भाग क़ुरआन के पुण्य) इसी प्रकार मोमिन की क़ब्र (समाधि) में अच्छे कर्म एक अच्छे रंग और सुगन्धित युवक के रूप में आयेगा और काफ़िर, मुनाफ़िक़ के पास इसके विपरीत रूप में। (मुसनद अहमद ५\२८७) इसकी अन्य व्याख्या के लिए *सूर: आराफ़-७* की टिप्पणी देखें। القسط धातु तथा الموازين की विशेषता है। अर्थ है न्याय करने वाली तराज़ू अथवा तराज़ूयें।

(५०) और यह शिक्षाप्रद शुभकारक क़ुरआन हमने ही उतारा है, फिर भी तुम क्या इससे इंकार करते हो ?[1]

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۭ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝

(५१) और अवश्य ही हमने इससे पहले इब्राहीम को प्रबोध प्रदान किया था,[2] और उसकी स्थिति से भली-भाँति परिचित थे ।[3]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۝

(५२) जब उसने अपने पिता और अपनी जाति वालों से कहा कि यह मूर्तियाँ, जिनके तुम पुजारी बने बैठे हो, ये क्या हैं ?[4]

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝

---

[1]यह क़ुरआन, जो सावधान होने वालों के लिए स्मृति एवं शिक्षा है और भलाई एवं उन्नति प्रद है, उसे भी हमने ही अवतरित किया है, तुम उसके مُنَزَّل من الله "अल्लाह की तरफ से अवतरित" होने से क्यों इंकार करते हो, जबकि तुम्हें स्वीकार है कि तौरात अल्लाह की तरफ से ही अवतरित किताब है ।

[2] من قبل का अर्थ या तो यह है कि हज़रत इब्राहीम को ज्ञान (शिक्षा एवं बुद्धि) देने का क़िस्सा हज़रत मूसा को तौरात देने से पहले का है । अथवा यह अर्थ है कि हज़रत इब्राहीम को नबी होने से पहले ही ज्ञान प्रदान कर दिया गया था ।

[3]अर्थात हम जानते थे कि वह इस ज्ञान का अधिकारी है और वह इसका उचित प्रयोग करेगा ।

[4] تمثال ، تماثيل का बहुवचन है । यह वास्तव में किसी वस्तु की प्रतिमा को कहते हैं । जैसे पत्थर की मूर्ति अथवा काग़ज़ और दीवार आदि पर किसी का चित्र । यहाँ तात्पर्य वह मूर्तियां हैं जो हज़रत इब्राहीम की जाति ने अपने पूज्यों की बना रखी थीं और जिनकी वे पूजा करते थे । عاكف - عكوف से कारक का रूप है, जिसका अर्थ आवश्यक रूप से पकड़ लेना और उस पर जम कर बैठ रहने के हैं, इसी से اعتكاف है, जिसमें मनुष्य अल्लाह की इबादत के लिए एकाग्रता के साथ, पूर्णरूप से जमकर बैठ जाता है । यहाँ पर इसका अर्थ मूर्तियों का आदर व पूजा तथा उनके स्थानों पर पुजारी बनकर बैठना है । यह प्रतिमायें (मूर्तियाँ और चित्र) क़ब्र पूजकों एवं विशिष्ट व्यक्ति के भक्तों पर भी आजकल लागू होती है और उनको बड़े आदर-सत्कार के साथ घर और दूकानों में शुभ के लिये लटकाया जाता है । अल्लाह तआला उन्हें सन्मति दे ।

قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عَابِدِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) उन्होंने कहा, हमने अपने पूर्वजों को इनकी पूजा करते पाया है ।[1]

قَالَ لَقَدْ كُنتُمْ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٥٤﴾

(५४) आपने कहा फिर तो तुम और तुम्हारे पूर्वज निश्चय खुली गुमराही में थे ।

قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنتَ مِنَ اللَّاعِبِينَ ﴿٥٥﴾

(५५) उन्होंने कहा कि क्या आप वास्तव में सत्य लाये हैं अथवा यूँ ही मज़ाक़ कर रहे हैं ।[2]

قَالَ بَل رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ وَأَنَا عَلَىٰ ذَٰلِكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٦﴾

(५६) आप ने कहा (नहीं,) बल्कि वास्तव में तुम्हारा पोषक आकाशों और धरती का पालन-हार है, जिसने उन्हे पैदा किया है, और मैं तो इसी बात का साक्षी (और मानता) हूँ ।[3]

وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُم بَعْدَ أَن تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ﴿٥٧﴾

(५७) और अल्लाह की सौगन्ध मैं तुम्हारी मूर्तियों का उपचार अवश्य करूँगा जब तुम पीठ फेर कर चल दोगे ।[4]

---

[1]जिस प्रकार आज भी मुर्खता और मिथ्यावाद में फँसे हुए मुसलमानों को बिदअत (इस्लाम धर्म में नयी बात पैदा करना, जिसका इस्लाम धर्म के नियमों से कोई सम्बन्ध या प्रमाण न मिलता हो) और व्यर्थ की परम्पराओं से रोका जाता है, तो उत्तर देते हैं कि हम इन्हें किस प्रकार छोड़ दें, जबकि हमारे पूर्वजों को भी यही करते देखा है । और यही उत्तर वह लोग भी देते हैं, जो किताब व सुन्नत के आदेशों को छोड़कर ज्ञानियों और उनकी ओार सम्बन्धित फ़िक़्ह (धर्मबोध) से सम्बन्धित रहने को ही आवश्यक समझते हैं ।

[2]यह इसलिए कहा कि उन्होंने इससे पहले एक ईश्वर की उपासना (तौहीद) के विषय में नहीं सुना था, उन्होंने सोचा कि शायद इब्राहीम हमारे साथ मज़ाक तो नहीं कर रहा है ।

[3]अर्थात मैं उपहास नहीं कर रहा हूँ, अपितु ऐसी चीज़ प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसका ज्ञान एवं निश्चय (दर्शन) मुझे प्राप्त है और वह यह कि तुम्हारा प्रभु ये मूर्तियाँ नहीं, वरन वह है जो आकाशों और धरती का मालिक और उनका पैदा करने वाला है ।

[4]यह आदरणीय इब्राहीम ने अपने हृदय में निश्चय किया, अन्य कहते हैं कि धीरे से कहा, जिसका तात्पर्य कुछ लोगों को सुनाना था, (अल्लाह बेहतर जानने वाला है) كَيد

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) अतएव उसने उन सब के खंड-खंड कर दिये, बस केवल बड़ी मूर्ति को छोड़ दिया, यह भी इसलिए कि उनकी ओर पलटें ।[1]

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾

(५९) वे कहने लगे कि हमारे देवताओं की यह दुर्गत किसने की, ऐसा व्यक्ति अवश्य पापी होगा ।[2]

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾

(६०) बोले कि हमने एक नवयुवक को इनके विषय में बात करते हुए सुना था, जिसे इब्राहीम कहा जाता है ।[3]

قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾

(६१) उन्होंने कहा, तो उसे सब की आँखों के सामने ले आओ ताकि सब देखें ।[4]

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾

(६२) कहने लगे, हे इब्राहीम ! क्या तूने ही हमारे देवताओं की यह दुर्गत बनाई है ?

(उपचार) का अर्थ यहाँ वह कर्म है, जिसके द्वारा वह जो मौखिक और भाषण के उपरान्त अपने कर्मों से क्रियान्वित करना चाहते थे, अर्थात मूर्तियों की तोड़-फोड़ ।

[1]अतएव जिस दिन अपनी ईद अथवा कोई पर्व मनाने के लिए सारी जाति के लोग बाहर चले गये और हज़रत इब्राहीम ने अच्छा समय जानकर मूर्तियों को तोड़-फोड़ डाला, केवल एक बड़ी मूर्ति रहने दी, कुछ ज्ञानी कहते हैं कि उन्होंने कुल्हाड़ी उस बड़ी मूर्ति के हाथ में फँसा दी, ताकि उस मूर्ति से पूछें ।

[2]अर्थात जब समारोह से वापस लौटे, तो देखा कि उनके देवताओं की मूर्तियाँ टूटी पड़ी हैं, तो कहने लगे कि यह कोई महापापी व्यक्ति है, जिसने यह घोर कर्म किया है ।

[3]उनमें से कुछ ने कहा कि वह नवयुवक इब्राहीम है ना, वह हमारी मूर्तियों के विरोध में बोलता है, लगता है कि यह उसी का काम है ।

[4]अर्थात उसको दण्डित होते हुए देखें, ताकि फिर कोई और यह काम न करे । अथवा यह अर्थ है कि लोग इस बात की गवाही दें कि उन्होंने इब्राहीम को मूर्तियाँ तोड़ते हुए देखा या उन मूर्तियों के विरोध में बातें करते हुए सुना है ।

(६३) आपने उत्तर दिया, बल्कि यह काम तो उनके बड़े देवता ने किया है, तुम अपने देवताओं से पूछ लो, यदि वह बोलते हों ।[1]

قَالَ بَلْ فَعَلَهُۥ كَبِيرُهُمْ هَٰذَا فَسْـَٔلُوهُمْ إِن كَانُوا۟ يَنطِقُونَ ﴿٦٣﴾

---

[1]अर्थात आदरणीय इब्राहीम को जनसमूह में लाया गया और उनसे पूछा गया। आदरणीय इब्राहीम ने उत्तर दिया कि यह काम तो उस बड़ी मूर्ति का है, यदि ये (टूटी-फूटी मूर्तियाँ) बोलकर बतला सकें तो तनिक उन मूर्तियों से पूछो तो। यह बातें उन्होंने उनकी हँसी उड़ाने और मूर्खता का मज़ाक उड़ाने के लिए कही थी, ताकि वे लोग यह बात जान लें कि, जो स्वयं न बोल सकता हो, और न किसी चीज़ का पहले से ज्ञान रखने की शक्ति रखता हो, वह देवता नहीं हो सकता है, और न उसे पूज्य कहना सही है। एक हदीस सही में आदरणीय इब्राहीम के इस कथन بل فعلـه كبيرهم को मिथ्या कथन कहा गया है। कि आदरणीय इब्राहीम ने तीन झूठ बोले, दो अल्लाह के लिए, एक إني سقيم और दूसरा यही और तीसरा आदरणीया सारह अपनी पत्नी को बहन कहना। (सहीह बुख़ारी अध्याय अंबिया) वर्तमान युग के कुछ व्याख्याकारों ने इस हदीस को क़ुरआन के विरूद्ध मान कर इस का इंकार कर दिया है, और इसे सही मानने को अतिश्योक्ति और हदीस पर अंधविश्वास कहा है। परन्तु उनका यह विचार उचित नहीं। निःसन्देह वास्तविकता के आधार पर उनको मिथ्या नहीं कहा जा सकता, परन्तु प्रत्यक्ष रूप से उनको झूठ से अलग भी नहीं किया जा सकता। यद्यपि ये झूठ अल्लाह के यहाँ पकड़ योग्य नहीं है, क्योंकि वह अल्लाह के लिए बोला गया, जबकि कोई पाप कर्म अल्लाह के लिए नहीं हो सकता और यह तब ही हो सकता है जब प्रत्यक्ष रूप से झूठ होते हुए भी यह वास्तव में झूठ न हो जैसे आदरणीय आदम के विषय में غوى तथा عصى (अवज्ञा की) (विपथ हो गये) का शब्द प्रयोग किया गया है। जबकि क़ुरआन स्वयं इस को अर्थात वृक्ष से खाने को भूल तथा निश्चय की कमी का परिणाम बताता है। जिससे प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध है कि फिर काम के दो पक्ष होते हैं एक पक्ष से वह अच्छा तथा प्रत्यक्ष रूप में बुरा होता है, अतः इब्राहीम का यह कथन प्रत्यक्ष रूप से झूठ ही है इसलिए कि यर्थाथता के विपरीत था तथा मूर्तियों को उन्होंने स्वयं तोड़ा किन्तु इसे बड़ी मूर्ति से सम्बन्धित किया, किन्तु उनका लक्ष्य दूसरी ओर संकेत करना तथा एकेश्वरवाद को प्रमाणित करना था इसलिए हम झूठ की जगह तर्क देने तथा मूर्ति पूजकों की मूर्खता को सिद्ध करने का एक रूप समझेंगे इसके सिवाय इन तीन झूठ की चर्चा जिस संदर्भ में आया है वह भी विचारणीय है और वह है अल्लाह के सामने सिफ़ारिश के लिए महशर में जाने से कतराना कि संसार में उनसे तीन अवसरों पर चूक हुई है जबकि वह चूक नहीं है किन्तु वह अल्लाह के प्रताप से इतने भयभीत होंगे कि यह बातें झूठ के साथ प्रत्यक्ष समानता के कारण पकड़ के योग्य दिख पड़ेंगी अतः

(६४) अत: उन्होंने अपने मन में मान लिया और (मन ही में) कहने लगे कि वास्तव में तुम स्वयं पापी हो ।[1]

فَرَجَعُوٓا إِلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوٓا إِنَّكُمْ أَنتُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٦٤﴾

(६५) फिर औंधे सिर डालकर (कुछ सोच-समझ कर, यद्यपि वे स्वीकार कर चुके थे फिर भी वे बोले) कि यह तुम जानते हो कि यह नहीं बोलते ।[2]

ثُمَّ نُكِسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هَٰٓؤُلَآءِ يَنطِقُونَ ﴿٦٥﴾

(६६) (इब्राहीम ने) उसी समय कहा : हाय ! क्या तुम उनकी पूजा करते हो, जो न तुम्हें कुछ भी लाभ पहुँचा सकते हैं और न हानि ।

قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾

(६७) थू है तुम पर और उन पर जिनकी तुम अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करते हो । क्या तुम्हें इतनी भी बुद्धि नहीं ?[3]

أُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

हदीस का उद्देश्य इब्राहीम को झूठा बनाना कदापि नहीं वरन उस स्थिति का दिखाना है जो प्रलय के दिन अल्लाह के भय से उन पर आच्छादित होगी ।

[1]आदरणीय इब्राहीम के इस उत्तर को सुनकर वे लोग सोच में पड़ गये और एक-दूसरे को उत्तरहीन होकर कहने लगे, वास्तव में पापी तो तुम ही हो, जो अपनी जान न बचा सके और क्षति पहुँचाने वाले का हाथ पकड़ने की शक्ति न रखता हो, वह पूजा के योग्य कैसे हो सकता है ? कुछ ने कहा कि देवता की बिल्कुल रक्षा का प्रबन्ध न करने पर एक-दूसरे को बुरा कहा और रक्षा हीन छोड़ने पर एक-दूसरे को पापी कहा ।

[2]फिर हे इब्राहीम ! तू हमसे यह क्यों कह रहा है कि इनसे पूछो क्या यह बोल सकते हैं ? जबकि तू भली-भाँति जानता है कि यह बोलने की शक्ति नहीं रखते ।

[3]अर्थात जब वे लोग स्वयं उनकी विवशता को मानने पर बाध्य हो गये तो फिर उनकी मूर्खता पर अफ़सोस करते हुए कहा कि अल्लाह को छोड़कर ऐसे शक्तिहीन, नि:सहाय की तुम पूजा करते हो ?

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ﴿٦٨﴾

(६८) उन्होने कहा कि इसे जला दो और अपने देवताओं की सहायता करो, यदि तुम्हें कुछ करना है तो।[1]

قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾

(६९) हमने कहा, हे आग ! तू ठंडी हो जा और इब्राहीम के लिए सलामती [(शान्ति) और सुखदायी] बन जा।

وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ ﴿٧٠﴾

(७०) यद्यपि उन्होंने उस (इब्राहीम) का बुरा चाहा, परन्तु हमने उन्हें ही हानि ग्रस्त (असफल) कर दिया।

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾

(७१) और हम (इब्राहीम) और लूत को बचाकर उस भूमि की ओर ले गये, जिसमें हम ने समस्त जगत के लिये विभूतियाँ रखी थीं।[2]

---

[1]आदरणीय इब्राहीम ने जब अपना तर्क प्रस्तुत कर दिया और उनकी विपथा (गुमराही) और मूर्खता को इस प्रकार से व्यक्त किया कि उनके पास कोई उत्तर न रहा। चूँकि वे संमार्ग विहीन थे और कुफ्र और शिर्क ने उनके हृदय में अंधकार कर दिया था। इसलिए वजाय शिर्क छोड़ने के उलटे आदरणीय इब्राहीम के विरोध में और कड़े हो गये। और अपने देवताओं की दुहाई देकर उनको आग में डालने की तैयारी करने लगे। अत: उन्होंने आग का एक बड़ा सा अलाव तैयार किया, और कहा जाता है कि आदरणीय इब्राहीम को डोल में रखकर फेंका गया, लेकिन अल्लाह तआला ने आग को आदेश दिया कि इब्राहीम के लिए तू इतनी ठंडी हो जा कि उसे कष्ट न हो। ज्ञानियों का कथन है कि यदि अल्लाह तआला शीतल के साथ सलामत शब्द न कहता तो इब्राहीम के लिए उसकी ठंडक कष्टदायक एवं असहनीय होती। कुछ भी हो यह एक वहुत वड़ा चमत्कार है, जो आसमान से बातें करती हुई आग की लौ का फूलों की सेज के रूप में आदरणीय इब्राहीम के लिए अल्लाह तआला के आदेश से प्रदर्शित हुआ। इस प्रकार अल्लाह तआला ने अपने उपासक को उसके शत्रुओं की चाल से सुरक्षित कर लिया।

[2]इससे तात्पर्य वहुत से टीकाकार ने सीरिया देश लिया है, जिसको हरियाली, फलों तथा नहरों की अधिकता और नवियों का निवास स्थल होने के कारण मंगलमय (बरकत) कहा गया है।

وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَٰلِحِينَ ﴿٧٢﴾

(७२) और हमने उसे इसहाक़ प्रदान किया, और उस पर अधिक याक़ूब, तथा प्रत्येक को सत्कर्मी बनाया।[1]

وَجَعَلْنَٰهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِمْ فِعْلَ ٱلْخَيْرَٰتِ وَإِقَامَ ٱلصَّلَوٰةِ وَإِيتَآءَ ٱلزَّكَوٰةِ ۖ وَكَانُوا۟ لَنَا عَٰبِدِينَ ﴿٧٣﴾

(७३) और हमने उन्हें प्रमुख बना दिया कि हमारे आदेश से लोगों का मार्गदर्शन करें और हमने उनकी ओर सत्कर्मों के करने और नमाज़ स्थापित करने और ज़कात देने की प्रकाशना (वह्यी) की और वे सब के सब हमारे उपासक थे।

وَلُوطًا ءَاتَيْنَٰهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَٰهُ مِنَ ٱلْقَرْيَةِ ٱلَّتِى كَانَت تَّعْمَلُ ٱلْخَبَٰٓئِثَ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمَ سَوْءٍ فَٰسِقِينَ ﴿٧٤﴾

(७४) और हम ने लूत को भी विद्वता तथा ज्ञान प्रदान किया, और उसे उस बस्ती से मुक्ति दिया जहाँ के लोग गन्दे कर्मों में लिप्त थे, और वास्तव में वे महापापी थे।

وَأَدْخَلْنَٰهُ فِى رَحْمَتِنَآ ۖ إِنَّهُۥ مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٧٥﴾

(७५) और हमने उसको (लूत को) अपनी कृपा में सम्मिलित कर लिया। निःसंदेह वह सत्कर्मियों में से था।[2]

---

[1] نافلة अधिक को कहते हैं। आदरणीय इब्राहीम ने तो केवल पुत्र की कामना की थी, उनकी कामना के अतिरिक्त पौत्र भी प्रदान किया।

[2] आदरणीय लूत आदरणीय इब्राहीम के भाई के पुत्र (भतीजे) थे, और आदरणीय इब्राहीम पर ईमान लाये थे और उन के साथ ईराक से यात्रा करके सीरिया जाने वालों में से थे। अल्लाह ने उनको भी ज्ञान व तत्वज्ञान अर्थात नबूअत प्रदान की थी। वह जिस क्षेत्र के लिए नबी बनाकर भेजे गये थे, उसे अमूरः और सदूम कहा जाता है। यह फ़िलिस्तीन के मृत साग़र से लगा हुआ जार्डन की ओर उपजाऊ क्षेत्र था, जिसका बड़ा भाग अब मृत साग़र का एक भाग है। उनकी जाति वाले गुदा मैथुन जैसे कुकर्मों, रास्तों पर बैठकर राहियों पर आवाज़ें कसने और उन्हें तंग करने, कंकरिया मारने में कुख्यात थे, जिसे अल्लाह तआला ने कुकर्म (ख़बाएस) कहा है। अन्ततः आदरणीय लूत तथा उसके अनुयायियों को अपनी कृपा में प्रवेशित करके अर्थात उनको बचाकर समुदाय का सत्यानाश कर दिया।

(७६) और नूह के उस समय को (याद करो) जब उसने इससे पहले दुआ (विनय) की हमने उसकी दुआ (विनय) स्वीकार की, और हमने उसको और उसके परिवार को बड़ी पीड़ा से मुक्त कर दिया।

وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِن قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُۥ فَنَجَّيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥ مِنَ ٱلْكَرْبِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾

(७७) और उस जाति के मुकाबले में उसकी सहायता की जिसने हमारी आयतों को झुठलाया था। वास्तव में वे बुरे लोग थे, तो हमने उन सबको डुबो दिया।

وَنَصَرْنَٰهُ مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَآ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنَٰهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٧٧﴾

(७८) और दाऊद एवं सुलैमान को (याद कीजिए,) जबकि वे खेत के विषय में फैसला (निर्णय) कर रहे थे कि कुछ लोगों की बकरियाँ रात्रि को उसमें चर गयी थीं और उनके फैसले (निर्णय) में हम विद्यमान थे।

وَدَاوُۥدَ وَسُلَيْمَٰنَ إِذْ يَحْكُمَانِ فِى ٱلْحَرْثِ إِذْ نَفَشَتْ فِيهِ غَنَمُ ٱلْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شَٰهِدِينَ ﴿٧٨﴾

(७९) हम ने उसका उचित फैसला सुलैमान को समझा दिया।[1] अवश्य हमने प्रत्येक को

فَفَهَّمْنَٰهَا سُلَيْمَٰنَ ۚ وَكُلًّا ءَاتَيْنَا

[1]टीकाकारों ने यह कथा इस प्रकार वर्णित किया है कि एक व्यक्ति की बकरियाँ रात को दूसरे व्यक्ति के खेत में चली गयीं और खेत को चर गयीं। आदरणीय दाऊद जो पैग़म्बर (ईशदूत) के साथ-साथ राज्याधिकारी भी थे। उन्होंने फैसला दिया कि बकरियाँ खेत वाला ले ले, ताकि उसकी क्षति पूर्ति हो सके। आदरणीय सुलैमान ने इस न्याय का विरोध किया और फैसला किया कि कुछ समय के लिए बकरियाँ खेत के मालिक को दे दी जायें ताकि वह इनका लाभ उठाए, और खेती बकरी वाले को दे दी जाये ताकि वह खेतों की सिंचाई और देखभाल करके उसे सुधारे, जब वह खेत उस दशा में आ जाये जो बकरियों के चरने से पहले था, तो खेत, खेत के मालिक को और बकरियाँ, बकरियों के मालिक को वापस कर दी जायें। पहले न्याय की तुलना में दूसरा फैसला इस दृष्टि से उचित था कि किसी को अपनी चीज़ से हाथ नहीं धोना पड़ा, जबकि पहले फैसले में बकरी वाले को बकरियों से हाथ धोना पड़ा था। फिर भी अल्लाह ने आदरणीय दाऊद की प्रशंसा की कि हमने प्रत्येक को (अर्थात दाऊद और सुलैमान को) ज्ञान एवं विवेक प्रदान किया था। इस कथा से कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि प्रत्येक मुजतहिद उचित

حُكْمًا وَّعِلْمًا ۚ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۚ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾

हिकमत (विद्वता) और ज्ञान दे रखा था, और दाऊद के अधीन हमने पूर्वत कर दिये थे, जो महिमा (तस्बीह) करते थे,[1] और पक्षियों को भी ।[2] ऐसा हम करने वाले ही थे ।[3]

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْ بَأْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾

(८०) और हमने उसे तुम्हारे लिये वस्त्र (कवच) बनाना सिखाया, ताकि युद्ध (की हानि) से तुम्हारा बचाव कर सके ।[4] फिर क्या तुम अब भी कृतज्ञता व्यक्त करोगे ?

न्याय करने वाला होता है । इमाम शौकानी इस तर्क को उचित नहीं मानते । किसी एक मामले में दो अलग-अलग (विपरीत) न्याय करने वाले दो न्यायाधीश, एक ही समय में उचित न्याय करने वाले (मुसय्यिब) नहीं हो सकते, उनमें से अवश्य एक (मुसय्यिब) उचित न्याय करने वाला और दूसरा अनुचित न्याय करने वाला (मुख्ती) होगा । यद्यपि यह अलग बात है कि न्यायाधीश जिसका न्याय अनुचित है अल्लाह की दृष्टि में पापी नहीं होगा, बल्कि उसे एक पुण्य मिलेगा । कमा फ़िल हदीस (फ़तहुल क़दीर)

[1]इसका अर्थ कदापि नहीं कि पर्वत उनकी तस्बीह (प्रशंसागान) की ध्वनि से गूँज उठते थे (क्योंकि इसमें कोई चमत्कार की बात ही बाकी नहीं होती) प्रत्येक छोटे-बड़े रूह की उच्च आवाज़ से गूँज पैदा हो सकती है (प्रतिध्वनि के रूप में) । अपितु अर्थ आदरणीय दाऊद के साथ पर्वतों का भी तस्बीह पढ़ना है । यह कहने की बात नहीं थी वास्तव में था ।

[2]पक्षी भी दाऊद की करूणा भरी आवाज़ को सुनकर अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते थे अथवा पक्षी भी उनके अधीन कर दिये गये थे ।

[3]अर्थात यह समझाना, निर्णय का ज्ञान देना तथा अधीन करना हमारा काम था । अतः इस पर किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए न इंकार करना चाहिए । इसलिए कि हम जो चाहें कर सकते हैं ।

[4]अर्थात हमने दाऊद के लिए लोहे को कोमल बना दिया था जिससे वह लड़ाई के लिये वस्त्र तथा कवचें बनाते थे जो रण क्षेत्र में तुम्हारी सुरक्षा का साधन हैं । नबी के सहचर कतादह का कहना है कि ईशदूत दाऊद से पहले भी कवचें बनती थीं किन्तु वह सादी थीं उनमें कड़ियाँ नहीं होती थीं । ईशदूत दाऊद प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने कड़ियों और कुन्डे वाली कवचें तैयार कीं । (इब्ने कसीर)

(८१) और हमने सुलैमान के अधीन तीव्र प्रचण्ड वायु कर दी[1] जो उसके आदेश पर उस धरती की ओर चलती थी, जिसमें हमने विभूतियाँ रखी थीं। और हम सर्वज्ञ हैं।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ۝٨١

(८२) और (इसी प्रकार) बहुत से शैतानों को भी (उसका अधीनस्थ बनाया था,) जो उसके आदेश पर डुबकी लगाते थे और इसके अतिरिक्त बहुत से कार्य करते थे।[2] और उनकी रक्षा करने वाले हम ही थे।[3]

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۝٨٢

(८३) और अय्यूब (की उस स्थिति को याद करो,) जबकि उसने अपने प्रभु को पुकारा कि मुझे यह रोग लग गया है, और तू सब दयावानों से अधिक दयानिधि है।

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝٨٣

(८४) तो हमने उसकी (गुहार) सुन ली और जो दुख उन्हें था उसे दूर कर दिया, और उसे उसका परिवार प्रदान किया, बल्कि उसे अपनी

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ

---

[1]जिस प्रकार पर्वत और पक्षी आदरणीय दाऊद के अधीन कर दिये गये थे, उसी प्रकार वायु आदरणीय सुलैमान के अधीन कर दी गयी थी। वह अपने राज्य के अधिकारियों समेत तख़्त पर आसीन हो जाते और जहाँ चाहते महीनों की यात्रा क्षणों एवं पलों में तय करके वहाँ पहुँच जाते, हवा उनके तख़्त को उड़ाकर ले जाती। उपजाऊ धरती का अर्थ सीरिया का क्षेत्र है।

[2]जिन्नात भी आदरणीय सुलैमान के अधीन थे, जो उनके आदेश से समुद्र में डुबकी लगाते और उनके लिए मोती-जवाहरात निकाल लाते, इसी प्रकार अन्य कार्य, जो आप चाहते करते थे।

[3]अर्थात जिन्नों में जो उद्दण्डता और आतंक का मिश्रण है, उससे हमने सुलैमान की रक्षा की और वे उनके सामने सिर नहीं उठा सकते थे।

مَعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِندِنَا وَذِكْرَىٰ لِلْعَٰبِدِينَ ﴿٨٤﴾

विशेष कृपा से[1] उनके साथ वैसे ही और दिये, ताकि उपासकों के लिए शिक्षाप्रद (स्मरणीय) हो।

وَإِسْمَٰعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا ٱلْكِفْلِ ۖ كُلٌّ مِّنَ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿٨٥﴾

(८५) और इस्माईल और इदरीस, और ज़ुलकिफ्ल[2] ये सब धैर्यवान थे।

وَأَدْخَلْنَٰهُمْ فِى رَحْمَتِنَآ ۖ إِنَّهُم مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٨٦﴾

(८६) हमने उन्हें अपनी दया (अनुकम्पा) में प्रवेश दिया। ये सब पुनीत लोग थे।

وَذَا ٱلنُّونِ إِذ ذَّهَبَ مُغَٰضِبًا

(८७) तथा मछली वाले [3] (यूनुस अलैहिस्सलाम) को (याद करो) ! जबकि वह क्रोधित होकर

---

[1]कुरआन मजीद में आदरणीय अय्यूब को धैर्यवान कहा गया है। (सूर: साद) इसका अर्थ यह है कि उनकी परीक्षा ली गयी, जिसमें उन्होंने कृतज्ञता और धैर्य (सब्र और शुक्र) का दामन हाथ से नहीं छोड़ा। वे परीक्षायें और कष्ट क्या थे, इसका कोई प्रमाणित वर्णन नहीं मिलता। फिर भी कुरआन के वर्णन अनुसार प्रतीत होता है कि अल्लाह तआला ने उन्हें धन-धान्य और पुत्र प्रदान कर रखे थे, परीक्षा के लिए अल्लाह तआला ने यह सभी छीन लिये थे, यहाँ तक कि शारीरिक शक्ति भी क्षीण कर दी थी, अतएव रोगों से पीड़ित थे। अन्ततः कहा जाता है कि १८ वर्ष की परीक्षा के बाद प्रभु के समक्ष प्रार्थना की, अल्लाह ने प्रार्थना स्वीकार की और स्वास्थ के साथ-साथ धन-धान्य और पुत्र पहले से दोगुने प्रदान किये। इसका कुछ वर्णन सहीह इब्ने हिब्बान के एक बयान में मिलता है (भाग ४, पृष्ठ २४४, मजमउज्जवायद ८/२०८) किसी प्रकार की शिकायत और रोना-धोना सब्र (धैर्य) के विपरीत है, जिसका प्रदर्शन आदरणीय अय्यूब ने नहीं किया, और प्रार्थना सब्र के विपरीत नहीं है, इसीलिए अल्लाह तआला ने उसके लिए (प्रार्थना के लिए) "हमने स्वीकार कर ली" का शब्द प्रयोग किये हैं।

[2]ज़ुलकिफ़्ल के विषय में मतभेद है कि वह नबी थे या नहीं ? कुछ उनकी नबूअत और कुछ विलायत के पक्ष में हैं। इमाम इब्ने जरीर इनके विषय में मौन हैं, इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं : "कुरआन में नबियों के साथ उनका भी वर्णन उनके नबी होने को व्यक्त करता है।" अल्लाह भली-भाँति जानता है।

[3]मछली वाले से तात्पर्य आदरणीय यूनुस हैं जो अपनी क़ौम से नाराज़ होकर अल्लाह के प्रकोप की धमकी देकर, अल्लाह के आदेश के बिना ही वहाँ से चल दिये थे, जिस पर अल्लाह तआला ने पकड़ा और उन्हें मछली का भोजन (कौर) बना दिया, इसका कुछ वर्णन सूर: *यूनुस* में हो चुका है और कुछ सूर: *साफ़्फ़ात* में आयेगा।

فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۚ

चल दिया और समझता था कि हम उसे न पकड़ेंगे। अन्ततः उसने अँधेरों[1] में से पुकारा कि इलाही (पूजनीय) तेरे अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं है, तू पवित्र है। निःसंदेह मैं ही अत्याचारियों में से हूँ।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ وَكَذٰلِكَ نُـنْجِى الْمُؤْمِنِيْنَ

(८८) तो हमने उसकी पुकार सुन ली और उसे दुखों से मुक्त किया। और हम इसी प्रकार ईमान वालों को बचा लिया करते हैं।[2]

وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۚ

(८९) और ज़करिया को (याद करो,) जब उस ने अपने प्रभु से प्रार्थना की कि हे मेरे प्रभु! मुझे अकेला न छोड़, तू सबसे अच्छा उत्तराधिकारी है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ

(९०) तो हमने उसकी प्रार्थना अंगिकार कर ली और उसे यहया प्रदान किया।[3] और उनकी पत्नी को उनके लिए सुधार दिया।[4] यह पुनीत लोग सत्कर्मों की ओर जल्दी दौड़ते थे, और

---

[1] ظُلمات، ظُلمةٌ का बहुवचन है, जिसका अर्थ अंधेरा होता है। आदरणीय यूनुस अंधेरों में घिरे हुए थे। रात का अंधेरा, समुद्र का अंधेरा और मछली के पेट का अंधेरा।

[2]हमने यूनुस की प्रार्थना स्वीकार की और अंधेरा और मछली के पेट से छुटकारा दिया। जो भी मोमिन हमें इस प्रकार के कष्टों और दुखों में पुकारेगा हम उसे छुटकारा देंगे। हदीस में भी आता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "जिस मुसलमान ने भी इस दुआ के साथ किसी भी विषय के लिए दुआ माँगी तो अल्लाह ने उसे स्वीकार किया।" (जामे तिर्मिज़ी संख्या ३५०५ तथा हदीस के विशेषज्ञ अलबानी ने इसे सही कहा है)

[3]आदरणीय ज़करिया का बुढ़ापे में पुत्र के लिए दुआ करना और अल्लाह की ओर से प्रदान किया जाना, इसका आवश्यक वर्णन सूरः *आले-इमरान* और सूरः *ताहा* में हो चुका है। यहाँ भी इस ओर इशारा (संकेत) इन शब्दों में किया गया है।

[4]अर्थात वह बाँझ तथा किसी बच्चे के जन्म देने योग्य नहीं थी, हमने उसके इस दोष को दूर करके उसे एक नेक पुत्र प्रदान किया।

وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ۖ وَكَانُوا لَنَا خٰشِعِينَ ﴿٩٠﴾

हमें मोह और भय के साथ पुकारते थे, और हमारे सामने विनम्र रहते थे ।[1]

وَالَّتِيٓ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِن رُّوحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ ءَايَةً لِّلْعٰلَمِينَ ﴿٩١﴾

(९१) और वह (सती महिला) जिसने अपने सतीत्व की रक्षा की, हमने उसके अन्दर अपनी आत्मा फूँकी और स्वयं उसको और उसके पुत्र को सम्पूर्ण जगत के लिए निशानी (लक्षण) बना दिया ।[2]

إِنَّ هٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وٰحِدَةً وَأَنَا۠ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٩٢﴾

(९२) यह तुम्हारा गिरोह है जो वास्तव में एक ही गिरोह है, और मैं तुम सबका प्रभु हूँ । अत: तुम सब मेरी ही इबादत (उपासना) करो ।[3]

وَتَقَطَّعُوٓا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ ۖ كُلٌّ إِلَيْنَا رٰجِعُونَ ﴿٩٣﴾

(९३) परन्तु लोगों ने परस्पर अपने धर्म में गुट बना लिये । सबको हमारी ओर पलटकर आना है ।[4]

---

[1]अर्थात प्रार्थना के स्वीकार होने के लिए यह आवश्यक है कि इन बातों को ध्यान में विशेष रूप से रखना चाहिए जिनका वर्णन यहाँ पर विशेष रूप से किया गया है । उदाहरण स्वरूप, रोने-धोने के साथ अल्लाह के समक्ष दुआ (प्रार्थना) और मुनाजात (विनय), अच्छे कर्मों में आगे बढ़ाना, डर और मोह के मिले जुले भाव के साथ प्रभु को पुकारना और उसके सामने विशेषत: विनम्रता तथा विनय के भाव से ध्यानमग्न होना ।

[2]यह आदरणीया मरियम और आदरणीय ईसा का वर्णन है, जो पहले गुज़र चुका है ।

[3]उम्म: (गिरोह) का भावार्थ यहाँ धर्म अथवा धार्मिक समुदाय है, अर्थात तुम्हारा धर्म और गिरोह एक ही है और वह धर्म तौहीद का धर्म है, जिसका आमन्त्रण सभी नबियों ने दिया और गिरोह, इस्लाम का गिरोह है जो सभी नबियों का गिरोह रहा है । जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "हम नबियों का समूह अल्लाती संतान (जिन का पिता एक और मातायें कई हों) हैं, हमारा धर्म एक ही है ।" (इब्ने कसीर)

[4]अर्थात तौहीद (अद्वैत) और प्रभु की इबादत (उपासना) छोड़कर कई सम्प्रदायों और गिरोहों में बट गये । एक गिरोह मुशरिकों (मूर्तिपूजक आदि) और काफ़िरों का हो गया । और नबियों और रसूलों को मानने वाले भी पीढ़ियाँ बन गये, कोई यहूदी हो गया, कोई इसाई, और कोई कुछ ---- और दुर्भाग्य से मुसलमानों में स्वयं भी गिरोह

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) फिर जो भी सत्कर्म करे, और वह मोमिन (एकेश्वरवादी) भी हो, तो उसके प्रयत्न की कोई अपेक्षा नहीं होगी। हम तो उसके लिखने वाले हैं।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾

(९५) और जिस बस्ती को हमने विनष्ट कर दिया। उसके लिए अनिवार्य है कि वहाँ के लोग पलटकर नहीं आयेंगे।[1]

حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

(९६) यहाँ तक कि याजूज और माजूज खोल दिये जायेंगे और वे प्रत्येक ढलवान से दौड़ते आयेंगे।[2]

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ

(९७) तथा सत्य वचन निकट आ लगेगा उस समय काफ़िरों की आँखें फटी की फटी रह

वन्दी पैदा हो गयी, और यह भी बिसियों गिरोह में बंट गये। इन सब का न्याय जब ये प्रभु के समक्ष प्रस्तुत होंगे तब वहीं होगा।

[1] حرام निषेध (आवश्यक) के अर्थ में है, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है, या फिर لا يَرْجِعُون में ٧ अधिक है अर्थात जिस बस्ती को हमने ध्वस्त कर दिया उसका संसार में पलटकर आना असम्भव है (आ ही नहीं सकते)

[2]याजूज और माजूज का आवश्यक विवरण सूरः कहफ़ के अन्त में गुज़र चुका है। आदरणीय ईसा की उपस्थिति में प्रलय के निकट वे प्रदर्शित होंगे और इतनी वेग गति से यह हर ओर फैल जायेंगे कि प्रत्येक ऊँची जगह से ये दौड़ते हुए प्रतीत होंगे। उनके आतंक और कुकर्मों से ईमान वाले तंग आ जायेंगे। फिर आदरणीय ईसा के शाप से यह नष्ट हो जायेंगे। उनके शवों की दुर्गन्ध हर ओर फैलेगी, यहाँ तक कि अल्लाह तआला पक्षियों को भेजेगा, जो उनके शवों को उठाकर समुद्र में फेंकेंगे। फिर एक बहुत तेज़ वर्षा करेगा, जिससे सारी धरती स्वच्छ हो जायेगी। (यह पूरा विवरण सहीह हदीस में वर्णित है, विस्तार के लिए व्याख्या इब्ने कसीर देखें)

يَٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا بَلْ كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿٩٧﴾

जायेंगी[1] कि हाय अफ़सोस ! हम इस दुर्दशा से निश्चिन्त थे, बल्कि वास्तव में हम अपराधी थे।

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ أَنتُمْ لَهَا وَٰرِدُونَ ﴿٩٨﴾

(९८) तुम तथा अल्लाह के सिवाय जिन-जिन की तुम पूजा करते हो, सब नरक के ईंधन बनोगे, तुम सब उस (नरक) में जाने वाले हो।[2]

لَوْ كَانَ هَٰٓؤُلَآءِ ءَالِهَةً مَّا وَرَدُوهَا ۖ وَكُلٌّ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٩٩﴾

(९९) यदि वे (सच्चे) देवता होते तो नरक में प्रवेश नहीं करते तथा सब के सब उसी में सदैव रहने वाले हैं।[3]

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾

(१००) वे वहाँ चिल्ला रहे होंगे तथा वहाँ कुछ भी न सुन सकेंगे।[4]

---

[1]अर्थात याजूज तथा माजूज के प्रकट होने के पश्चात क़ियामत का जो वादा है, वह सत्य है, अत्यन्त निकट आ जायेगा तथा जब यह क़ियामत घटित होगी तो काफ़िरों की आँखें फटी की फटी रह जायेंगी।

[2]यह आयत मक्का के मूर्तिपूजकों के विषय में अवतरित हुई, जो लात, मनात, उज़्ज़ा तथा हुबल की पूजा करते थे। ये सभी पत्थर की मूर्तियाँ थीं। जो जड़ अर्थात निर्जीव थीं, इसीलिए आयत में ما تعبدون का शब्द है तथा अरबी भाषा में ما निर्बोध के लिए आता है। अर्थात कहा जा रहा है कि तुम भी तथा तुम्हारे देवता भी जिन-जिन की मूर्तियाँ बनाकर तुमने पूजा के लिए रखी हैं सभी नरक की अग्नि के ईंधन हैं। पत्थर (पाषाण) की मूर्तियाँ का यद्यपि कोई अपराध नहीं है क्योंकि वह निर्जीव तथा निर्बोध हैं। परन्तु उन्हें पुजारियों के साथ नरक में केवल मूर्तिपूजकों को अत्यधिक अपमानित करने के लिए डाला जायेगा कि जिन देवताओं को तुम अपना सहारा समझते थे, वे भी तुम्हारे साथ नरक में नरक का ईंधन हैं।

[3]अर्थात यदि वास्तव में यह पूज्य होते तो साधिकार होते तथा तुम्हें नरक में जाने से रोक लेते। परन्तु वे तो स्वयं नरक में शिक्षा स्वरूप जा रहे हैं। तुम्हें जाने से किस प्रकार रोक सकते हैं। परिणाम स्वरूप देवता तथा पुजारी दोनों सदैव नरक में रहेंगे।

[4]अर्थात सारे के सारे अत्यन्त दुख एवं शोक के कारण चीख-चिल्ला रहे होंगे जिसके कारण वे एक-दूसरे की आवाज़ भी न सुन सकेंगे।

(१०१) परन्तु जिनके लिए हमारी ओर से पूर्व में ही पुण्य निर्धारित है। वे सब नरक से दूर ही रखे जायेंगे।[1]

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾

(१०२) वे तो नरक की आहट तक न सुन सकेंगे तथा अपनी इच्छित वस्तुओं के संग सदैव रहने वाले होंगे।

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾

(१०३) वह अति घबराहट भी [2] उन्हें उदासीन न कर सकेगी तथा फ़रिश्ते उन्हें हाथों-हाथ ले लेंगे कि यही तुम्हारा वह दिन है जिसका तुमको वचन दिया जाता रहा।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾

(१०४) जिस दिन हम आकाश को इस प्रकार लपेट देंगे जिस प्रकार रोल के कागज (पंजिका) लपेट दिये जाते हैं, [3] जैसे हमने प्रथम

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ

---

[1]कुछ लोगों के मन में यह सन्देह उत्पन्न हो सकता था अथवा मूर्तिपूजकों की ओर से उत्पन्न कराया जा सकता था, जैसाकि वास्तव में हो रहा है कि इबादत (उपासना) तो आदरणीय ईसा, उज़ैर, फ़रिश्तों तथा बहुत से पुण्य आत्माओं की की जाती है। तो क्या यह भी अपने पुजारियों के साथ नरक में डाले जायेंगे ? इस आयत में उसका भी निवारण कर दिया गया है कि यह लोग तो अल्लाह के श्रेष्ठ भक्त थे जिनके पुण्य के कारण अल्लाह की ओर से पुण्य अर्थात स्थाई सुख अथवा स्वर्ग की शुभसूचना निश्चित कर दी गयी है। यह नरक से दूर ही रखे जायेंगे। इन्हीं शब्दों से यह भावार्थ भी निकलता है कि दुनिया में जो लोग यह इच्छा रखते होंगे कि उनकी क़ब्रों पर गुम्बद बनें तथा लोग उन्हें कष्ट निवारक संकट मोचन समझकर भोग-प्रसाद चढ़ायें तथा उनकी पूजा करें, यह भी पत्थर की मूर्तियों की भाँति नरक का ईंधन बनेंगे, क्योंकि अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत करने के प्रचारक سبقت لهم منا الحسنى की परिधि में नि:संदेह नहीं आते।

[2]बड़ी व्यग्रता से तात्पर्य मृत्यु अथवा इस्राफ़ील का नरसिंघा है अथवा वह क्षण जब स्वर्ग-नरक के मध्य मृत्यु को वध कर दिया जायेगा। दूसरी बात अर्थात इस्राफ़ील का नरसिंघा तथा क़ियामत का आना अधिक उचित है।

[3]अर्थात जिस प्रकार लिपिक लिखने के पश्चात पन्नों अथवा लेख-पुस्तिका को लपेट कर रख देता है। जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

نُعِيْدُهٗ ۭ وَعْدًا عَلَيْنَا ۭ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾

बार पैदा किया था उसी प्रकार पुन: करेंगे, यह हमारा संकल्पित वचन है तथा यह हम अवश्य करके ही रहेंगे।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾

(१०५) तथा हम ज़बूर में चेतावनी तथा शिक्षा के पश्चात यह लिख चुके हैं कि धरती के उत्तराधिकारी मेरे सत्कर्मी भक्त ही होंगे।[1]

اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾

(१०६) उपासक भक्तों के लिए तो इसमें एक बड़ी सूचना है।[2]

﴿وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ﴾

"आकाश उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे।" (सूर: अल-ज़ुमर-६७)

سِجِلّ का अर्थ पत्रावली अथवा पंजिका है। لِلْكُتُبِ का अर्थ है على الكتاب بمعنى المكتوب (तफ़सीर इब्ने कसीर) अर्थ यह है कि लेखक के लिए लिखे हुए पत्रों को लपेट लेना जिस प्रकार सरल है, उसी प्रकार अल्लाह तआला के लिए विस्तृत आकाश को अपने हाथ में लपेट लेना कोई कठिन नहीं है।

[1]ज़बूर से तात्पर्य या तो ज़बूर ही है तथा ذكر से तात्पर्य शिक्षा-दीक्षा, जैसाकि अनुवाद में है अथवा फिर ज़बूर से तात्पर्य सभी प्राचीन आकाशीय पुस्तकें तथा ذكر से तात्पर्य सुरक्षित पुस्तक (लौह महफ़ूज़) है। अर्थात प्रथम तो 'सुरक्षित पुस्तक' में यह लिखित है तथा उसके पश्चात आकाशीय पुस्तकों में भी यह बात लिखी जाती रही है कि धरती के उत्तराधिकारी पुनीत लोग होंगे। धरती से तात्पर्य कुछ व्याख्याकारों के निकट स्वर्ग है तथा कुछ के निकट काफ़िरों की धरती अर्थात अल्लाह के पुनीत भक्त धरती में अधिपति होंगे तथा इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं कि मुसलमान जब तक अल्लाह के पुनीत भक्त बने रहे, वे संसार में प्रभावशाली तथा सफल रहे तथा भविष्य में भी जब कभी वह इन गुणों से युक्त होंगे अल्लाह के इस वचनानुसार धरती का अधिपत्य (राज्य) उनके पास ही होगा। इसलिए मुसलमानों के राज्य से वंचित होने की आधुनिक परस्थिति से किसी प्रकार की शंका अथवा संदेह नहीं होना चाहिए। यह वचन भक्तों के सदाचार से प्रतिबन्धित है। तथा إذا فات الشرط فات المشروط के अनुसार जब मुसलमान इस विशेषता से वंचित हो गये, तो राज्य से भी वंचित कर दिये गये। अर्थात इसमें राज्य प्राप्त करने का मार्ग वताया गया है तथा वह है अच्छे कर्म, अर्थात अल्लाह तथा रसूल के आदेशों के अनुसार जीवनयापन करना तथा उसकी सीमाओं तथा नियमों के अनुसार कार्यरत रहना।

[2] في هذا से तात्पर्य वह भाषण तथा चेतावनी है जो इस सूर: में विभिन्न प्रकार से वर्णन की गयी है। بلاغ से तात्पर्य अधिक पर्याप्त तथा लाभ है, अर्थात वह पर्याप्त एवं लाभकारी

وَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿١٠٧﴾

(१०७) तथा हमने आपको पूरे विश्व के लिए दया बनाकर ही भेजा है।[1]

قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰٓ إِلَىَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) कह दीजिए कि मेरी ओर तो बस प्रकाशना की जाती है कि तुम सब का पूज्य एक ही है, तो क्या तुम भी उसको मानने वाले हो ?[2]

है। अथवा इससे तात्पर्य क़ुरआन मजीद है जिसमें मुसलमानों के लिए लाभ एवं पर्याप्ती है। भक्त से तात्पर्य विनम्रता तथा विनय से अल्लाह की इबादत करने वाले, तथा शैतान एवं मन की इच्छाओं पर अल्लाह की आज्ञाकारिता को वरीयता देने वाले हैं।

[1]इसका अर्थ यह है कि जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान ले आयेगा, उसने मानों इस दया को स्वीकार कर लिया तथा अल्लाह के इन वरदानों की कृतज्ञता की। परिणाम स्वरूप लोक-परलोक के सुखों को प्राप्त करेगा, तथा चूँकि आपकी रिसालत पूर्ण विश्व के लिए है अतः आप पूर्ण विश्व के लिए कृपा बनकर अर्थात अपनी शिक्षाओं द्वारा लोक तथा परलोक के सुखों का भागी बनाने के लिए आये हैं। कुछ लोगों ने इस आधार पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अखिल जगत के लिए कृपा सिद्ध किया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कारण यह मानव जाति पूर्णरूप से विनाश तथा ध्वस्त होने से सुरक्षित कर दी गयी, जैसाकि विगत् समुदायों का अशुद्ध शब्दों के भाँति मिटा दिया गया, उम्मते मोहम्मदिया (जो इस आधार पर पूरी मानव जाति पर आधारित है कि इसमें वह भी हैं जिन्होंने आप को मान लिया तथा वह भी जिनके लिए आप उपदेशक बनाकर भेजे गये) पर सर्वनाशी प्रकोप नहीं आएगा अन्तिम ईशदूत के कथनों (अहादीस) से विदित होता है कि मुशरिकों मिश्रणवादियों के लिए अभिशाप न देना भी आप की दया का एक भाग था, (सहीह मुस्लिम संख्या २००६) इसी प्रकार क्रोध में किसी मुसलमान को धिक्कार या अपशब्द कहने को प्रलय के दिन दया का कारण बताना आप की दया का अंश है। (मुसनद अहमद क्रम संख्या ५\४३७, अबू दाऊद संख्या ४६५९ तथा अलबानी की अहादीसे सहीहा १७५८) इसी कारण आपने कहा कि «رَحْمَةٌ مُهْدَاةٌ» (सहीहुल जामे अस्सग़ीर संख्या २३४५) "मैं साक्षात दया बनकर आया हूँ जो अल्लाह की ओर से जगत वासियों के लिए एक उपहार है।"

[2]इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि मूल दया एकेश्वरवाद को ग्रहण करना तथा शिर्क से बचना है।

(१०९) फिर यदि वह विमुख हो जायें तो कह दीजिए कि मैंने तुम्हें समान रूप से सतर्क कर दिया है ।[1] मुझे ज्ञान नहीं है कि जिसका वादा तुमसे किया जा रहा है वह निकट है अथवा दूर है ।[2]

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ۭ وَ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾

(११०) नि:संदेह (अल्लाह तआला) तो तुम्हारी खुली बातों को जानता है तथा जिसे तुम छुपाते हो उसे भी जानता है ।

اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾

(१११) तथा मुझे इसका भी ज्ञान नहीं, सम्भव है कि यह तुम्हारी परीक्षा हो तथा एक निर्धारित समय तक का लाभ हो ।[3]

وَاِنْ اَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾

(११२) (नबी ने) स्वयं कहा, हे पालनहार ! न्याय के साथ निर्णय कर दे तथा हमारा प्रभु अत्यन्त दयालु है जिससे सहायता माँगी जाती है उन बातों पर जो तुम वर्णन कर रहे हो ।[4]

قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۭ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾

---

[1]अर्थात जिस प्रकार मैं जानता हूँ कि तुम एकेश्वरवाद के तथा इस्लाम के आमन्त्रण से विमुख होकर मेरे शत्रु हो, उसी प्रकार तुम्हें भी यह विदित होना चाहिए कि मैं तुम्हारा शत्रु हूँ तथा हमारा-तुम्हारा आपस में स्पष्ट विरोध है ।

[2]इस वादे से तात्पर्य क़ियामत है अथवा इस्लाम तथा मुसलमानों की विजय का वादा अथवा वह वचन जब अल्लाह की ओर से तुम्हारे विरूद्ध युद्ध करने का मुझे आज्ञा प्रदान की जायेगी ।

[3]अर्थात उस अल्लाह के वादे में देरी, मैं नहीं जानता कि तुम्हारी परीक्षा के लिए है अथवा एक विशेष समय तक लाभ उठाने का अवसर प्रदान करना है ।

[4]अर्थात मेरे विषय में जो तुम विभिन्न प्रकार की बातें करते रहते हो, अथवा अल्लाह के लिए सन्तान ठहराते हो, उन सभी बातों के सापेक्ष, वह प्रभु ही दया करने वाला तथा सहायता करने वाला है ।

सूरतुल हज्ज-२२

سُوْرَةُ الْحَجِّ

सूरतुल हज्ज* मदीने में अवतरित हुई तथा इसकी अठहत्तर आयतें तथा दस रूकूअ हैं।

बِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُوا۟ رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ ٱلسَّاعَةِ شَىْءٌ عَظِيمٌ ①

(१) लोगो ! अपने प्रभु से डरो ! निःसंदेह क़ियामत (प्रलय) का भूकम्प घोर महान विषय है।

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى ٱلنَّاسَ سُكَٰرَىٰ وَمَا هُم بِسُكَٰرَىٰ وَلَٰكِنَّ عَذَابَ ٱللَّهِ شَدِيدٌ ②

(२) जिस दिन तुम उसे देख लोगे, प्रत्येक दूध पिलाने वाली माता अपने दूध पीते शिशु को भूल जायेगी तथा सभी गर्भवतियों के गर्भ गिर जायेंगे तथा तू देखेगा कि लोग मतवाले दिखायी देंगे, यद्यपि वे वास्तव में मतवाले नहीं होंगे, परन्तु अल्लाह का प्रकोप अत्यन्त कठोर है।[1]

---

*इसके मक्का तथा मदीना में अवतरित होने में मतभेद है। उचित बात यही है इसका कुछ भाग मक्का में तथा कुछ भाग मदीने में अवतरित हुआ। यह क़ुर्तुबी का कथन है। (फ़तहुल क़दीर) यह क़ुरआन करीम की एक ही सूरः है जिसमें दो सज्दे हैं।

[1]उपरोक्त आयत में जिस भूकम्प का वर्णन है, उसके परिणाम दूसरी आयतों में वर्णित किये गये हैं, जिस का अर्थ लोगों पर अत्यधिक भय, डर तथा घबराहट का होना है, यह क़ियामत से पूर्व होगा तथा उसके साथ ही दुनिया का विनाश हो जायेगा। अथवा यह क़ियामत के पश्चात उस समय होगा, जब लोग क़ब्रों से उठकर हश्र के मैदान में एकत्रित होंगे। अधिकतर व्याख्याकार प्रथम विचार से सहमत हैं जबकि कुछ व्याख्याकार द्वितीय विचार के पक्ष में हैं। तथा उसके पक्ष में वह हदीसें प्रस्तुत करते हैं जैसे अल्लाह तआला आदम को आदेश देगा कि अपनी सन्तान में एक हज़ार में से ९९९ को नरक के लिए निकाल दे। यह सुनकर गर्भवतियों के गर्भ गिर जायेंगे, बालक बूढ़े हो जायेंगे तथा लोग अचेत दिखायी देने लगेंगे, यद्यपि वे अचेत नहीं होंगे, केवल यातना की कठोरता होगी। यह बात सहाबा को अत्यधिक भारी लगी, उनके मुख का रंग बदल

(३) तथा कुछ लोग अल्लाह के विषय में बातें बनाते हैं वह भी अज्ञानता के साथ तथा प्रत्येक उद्दण्ड शैतान का अनुसरण करते हैं।[1]

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَٰنٍ مَّرِيدٍ ﴿٣﴾

(४) जिस पर अल्लाह का निर्णय लिख दिया गया है[2] कि जो कोई भी उस की मित्रता करेगा वह उसे भटका देगा तथा उसे अग्नि की यातना की ओर ले जायेगा।

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَن تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ يُضِلُّهُ وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿٤﴾

(५) हे लोगो ! यदि तुम्हें मरने के पश्चात जीवित होने में संदेह है, तो सोचो, हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर माँस के लोथड़े से जो रूप दिया गया था तथा बिना चित्र था।[3] यह

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِن مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ

गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह देखकर फ़रमाया (घबराओ नहीं) ये ९९९ याजूज तथा माजूज में से होंगे तथा तुम में से केवल एक होगा, तुम्हारी (संख्या) लोगों में इस प्रकार होगी जैसे सफेद रंग के बैल के बगल में काले बाल अथवा काले रंग के बैल के बगल में सफेद रंग के बाल हों। तथा मुझे आशा है कि स्वर्गवासियों में तुम चौथाई अथवा तिहाई अथवा आधे होगे। जिसे सुनकर सहाबा ने हर्षोल्लास में अल्लाह अकबर का नारा उदघोषित किया। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूर: अल-हज*) प्रथम विचार भी अनुचित नहीं है। कुछ क्षीण हदीसों से उनकी भी पुष्टि होती है। इसलिए भूकम्प तथा उसके रूप से तात्पर्य यदि व्यग्रता तथा भायनकता की तीब्रता है (तथा प्रत्यक्ष यही है) तो तीब्र घबराहट तथा भयानकता का यह रूप दोनों अवसरों पर होगा। इसलिए दोनों ही विचार उचित हो सकते हैं, क्योंकि दोनों अवसरों पर लोगों की अवस्था इसी प्रकार होगी जैसी इस आयत में तथा सहीह बुख़ारी में वर्णन की गयी है।

[1]जैसे यह कि अल्लाह तआला पुन: पैदा करने का सामर्थ्य नहीं रखता, अथवा उसकी संतान है आदि।

[2]अर्थात शैतान के विषय में अल्लाह के भाग्य लेख में यह अंकित है।

[3]अर्थात वीर्य से चालीस दिन पश्चात गाढ़ा रक्त (अलक़:) तथा अलक: से माँस का लोथड़ा (मुदग:) बन जाता है, مُخَلَّقَةٍ से तात्पर्य वह शिशु है जिसका जन्म स्पष्ट तथा आकार एवं रूप प्रकट हो जाता है, ऐसे शिशु में प्राण डाल दिये जाते हैं तथा पूर्ण होने

وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ۖ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِن بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ

हम तुम पर स्पष्ट कर देते है[1] तथा हम जिसे चाहें एक निर्धारित समय तक माता के गर्भ में रखते हैं[2] फिर तुम्हें शिशु के रूप में संसार में लाते हैं, फिर ताकि तुम अपने पूर्ण यौवन को पहुँचो, तुम में से कुछ वे हैं जो मर जाते है[3] तथा कुछ जीर्ण आयु की ओर फिर से लौटा दिये जाते हैं कि वह एक वस्तु से परिचित होने के पश्चात पुन: अपरिचित हो जाये ।[4] तू देखता है कि धरती बंजर तथा सूखी है, फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं, तो

के पश्चात उसका जन्म होता है तथा غير مخلقة इसके विपरीत जिसका आकार तथा रूप प्रकट न हुआ हो, न उसमें प्राण फूँके जायें तथा समय से पूर्व ही वह गिर जायें । सहीह हदीसों में भी माता के गर्भाशय का वर्णन किया गया है । जैसे एक हदीस में है कि वीर्य चालीस दिन के पश्चात गाढ़ा रक्त (अलक़:) बन जाता है, फिर चालीस दिन के पश्चात लोथड़ा अथवा माँस का टुकड़ा (मुदग:) का रूप ले लेता है । फिर अल्लाह तआला की ओर से एक फ़रिश्ता आता है, जो उसमें प्राण फूँकता है, अर्थात चार महीने के पश्चात प्राण फूँके जाते हैं तथा शिशु एक स्पष्ट रूप का आकार ले लेता है, (सहीह बुख़ारी, किताब अल-अंबिया व किताबुल क़दर, मुस्लिम किताबुल क़दर बाब कैफ़ियतुल ख़लक़िल आदमी)

[1]अर्थात इस प्रकार हम अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य तथा सृष्टि की उत्पत्ति तुम्हारे लिए वर्णन करते हैं ।

[2]अर्थात जिसको नष्ट नहीं करना होता ।

[3]अर्थात पूर्ण युवावस्था से पूर्व ही । पूर्ण युवावस्था से तात्पर्य व्यस्कता अथवा बुद्धिमता एवं शक्तिशाली तथा समझने की आयु है जो ३० वर्ष से ४० वर्ष तक के मध्य की आयु है ।

[4]इससे तात्पर्य वृद्धावस्था में मनुष्य की शक्ति क्षीण होने के साथ बुद्धि एवं याद रखने की भी शक्ति क्षीण हो जाती है तथा याद रखने, बुद्धि एवं समझ में बालक के समान हो जाता है, जिसे सूर: यासीन में ﴿وَمَن نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ﴾ तथा सूर: तीन में ﴿ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ﴾ से सम्बांधित किया गया है ।

وَرَبَتْ وَأَنْبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ⑤

वह उभरती है तथा फूलती है तथा हर प्रकार की सुन्दर वनस्पति उगाती है ।[1]

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑥

(६) यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है तथा वही मृतकों को जीवित करता है तथा वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है।

وَأَنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَأَنَّ اللَّهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُورِ ⑦

(७) तथा यह कि क़ियामत निश्चय ही आने वाली है जिसमें कोई शंका अथवा संदेह नहीं तथा नि:संदेह अल्लाह (तआला) क़ब्र वालों को पुन: जीवित करेगा।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى

(८) तथा कुछ लोग अल्लाह के विषय में बिना ज्ञान के तथा बिना मार्गदर्शन के तथा बिना

---

[1]यह मृतक को जीवित करने पर अल्लाह तआला के सामर्थ्यवान होने का दूसरा तर्क है। प्रथम तर्क जो वर्णित हुआ, यह था जो शक्ति एक तुच्छ वीर्य की बूँद से इस प्रकार एक मनुष्य का रूप ढाल देती है तथा एक आकर्षक रूप प्रदान कर देती है, उसके अतिरिक्त विभिन्न अवस्थाओं से गुज़ारते हुए वृद्धावस्था की ऐसी अवस्था में ले जाती है, जहाँ उसके शरीर से लेकर उसका बौद्धिक एवं मस्तिष्क की शक्ति तक सभी क्षीणता, त्रुटियों एवं कमियों का शिकार हो जाती हैं। क्या उसके लिए पुन: जीवित करने में कठिनाई है ? नि:संदेह जो शक्ति मनुष्य को इन अवस्थाओं से गुज़ार सकती है, वही शक्ति मरने के पश्चात भी, उसे पुन: एक नया जीवन तथा रूप प्रदान कर सकती है। दूसरा तर्क यह दिया गया कि देखो धरती बंजर तथा मृतरूप में होती है, परन्तु वर्षा के पश्चात किस प्रकार जीवित तथा प्रफुल्लित तथा विभिन्न प्रकार एवं रूप के अनाज मेवे तथा रंग-बिरंगे फूलों से भर जाती है। उसी प्रकार अल्लाह तआला क़ियामत वाले दिन मनुष्यों को उनकी क़ब्रों से उठा खड़ा करेगा। जिस प्रकार हदीस में है कि एक सहाबी ने पूछा अल्लाह तआला जिस प्रकार मनुष्यों को पैदा करेगा, उसकी कोई निशानी सृष्टि में से वर्णन कीज़िए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "क्या तुम ऐसी घाटी से गुज़रे हो जो सूखी तथा बंजर हो, फिर पुन: उसे लहलहाते देखा हो ? उसने कहा "हाँ" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बस उसी प्रकार मनुष्यों का पुन: जीवित होना होगा।" (मुसनद अहमद भाग ४, पृष्ठ ११, इब्ने माजा अल-मोकद्दमा हदीस संख्या १८०)

وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٨﴾

किसी (दिव्य) प्रकाश वाली पुस्तक के झगड़ते हैं।

ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾

(९) अपनी पहलू मोड़ने वाला बनकर[1] इसलिए कि अल्लाह के मार्ग से भटका (विपथ कर) दे। वह दुनियाँ में भी अपमानित होगा तथा क़ियामत (प्रलय) के दिन भी हम उसे नरक में जलने का प्रकोप चखायेंगे।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾

(१०) यह उन कर्मों के कारण जो तेरे हाथों ने आगे भेज रखे थे। विश्वास करो कि अल्लाह (तआला) अपने भक्तों पर अत्याचार करने वाला नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ِۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ِۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ

(११) तथा कुछ लोग ऐसे भी हैं कि एक तट पर होकर अल्लाह की इबादत (उपासना) करते हैं। यदि कोई लाभ प्राप्त हो जाये तो आकर्षित होते हैं तथा यदि कोई दुख आ गया तो उसी समय विमुख हो जाते हैं।[2] उन्होंने

---

[1] ثَانِي कर्ता का रूप है, मोड़ने वाला। عطفٌ का अर्थ 'पहलू' है يُجادلُ से 'हाल' है। इसमें उस व्यक्ति की स्थिति वर्णन की गयी है जो बिना बौद्धिक तथा प्रमाणित तर्क के अल्लाह के विषय में झगड़ता है कि वह अभिमानी तथा विमुख होकर अपनी गर्दन मोड़ते हुए फिरता है, जैसे अन्य स्थान पर उसकी स्थिति को इन शब्दों में वर्णन किया गया है ﴿ وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ﴾ (सूर: लुक़मान-७) ﴿ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ ﴾ (सूर: अल-मुनाफ़िक़ून-५) ﴿ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ﴾ (सूर: बनी इस्राईल-८३)

[2] حـرفٌ का अर्थ है तट। इन तटों पर खड़ा होने वाला स्थिर नहीं होता अर्थात उसे शान्ति एवं स्थायित्व नहीं होता। उसी प्रकार जो व्यक्ति धर्म के विषय में संशय एवं संदेह का शिकार रहता है, उसकी भी स्थिति इसी प्रकार होती है, उसे धर्म पर स्थिरता नहीं मिलती, उसका उद्देश्य केवल सांसारिक लाभ्य होता है यदि मिलते रहें तो ठीक है, अन्यथा वह पुन: अपने पैतृक धर्म अर्थात कुफ़्र तथा शिर्क की ओर लौट जाता है। इसके विपरीत जो सच्चे मुसलमान होते हैं तथा ईमान तथा विश्वास से भरपूर होते हैं, वे عسر و يسر देखे बिना धर्म पर दृढ़ रहते हैं, यदि अनुकम्पायें प्राप्त हों तो कृतज्ञता

الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ⑪

दोनों लोक की हानि उठा लिया। वास्तव में यह स्पष्ट हानि है।

يَدْعُو مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ وَمَا لَا يَنفَعُهُ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ⑫

(१२) वह अल्लाह के अतिरिक्त उन्हें पुकारते हैं जो न हानि पहुँचा सकें न लाभ। यही तो दूरस्थ का भटकाव है।

يَدْعُو لَمَن ضَرُّهُ أَقْرَبُ مِن نَّفْعِهِ ۚ لَبِئْسَ الْمَوْلَىٰ وَلَبِئْسَ الْعَشِيرُ ⑬

(१३) उसे पुकारते हैं जिसकी हानि उसके लाभ से निकट है, नि:संदेह बुरे संरक्षक हैं तथा बुरे मित्र।[1]

व्यक्त करते हैं तथा यदि कष्टों से पीड़ित होते हैं तो धैर्य एवं सहन करते हैं। इसके अवतरित होने के कारण में एक सशंकित व्यक्ति की घटना भी इसी प्रकार वर्णन की गयी है। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरतुल हज्ज) कि एक व्यक्ति मदीने आता, यदि उसके घर बच्चे होते एवं उसी प्रकार जानवरों में अधिकता होती तो कहता, यह धर्म अच्छा है, यदि ऐसा न होता तो कहता, यह धर्म बुरा है। कुछ कथनों में यह गुण नये ग्रामीण मुसलमानों का वर्णन किया गया है। (फ़तहुल बारी)

[1]कुछ व्याख्याकारों के निकट يدعو कहेंगे के अर्थ में है। अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की पूजा करने वाले क़ियामत के दिन कहेंगे कि जिसकी हानि, उसके लाभ से निकटतम है, वह संरक्षक तथा मित्र नि:संदेह बुरा है अर्थात अपने देवताओं के विषय में यह कहेगा क्योंकि वहाँ उसकी आशाओं के महल ढह जायेंगे तथा ये देवता जिनके विषय में उसका विचार था कि वे अल्लाह की यातना से उसे बचा लेंगे, उसकी सिफ़ारिश करेंगे, वहाँ स्वयं वह देवता भी उसके साथ नरक के ईंधन होंगे। مولى का अर्थ स्वामी तथा सहायता करने वाला तथा عشير का अर्थ साथ रहनेवाला, साथी तथा निकटवर्ती है। सहायता करने वाला तथा साथी वह होता है जो दुख के अवसर पर काम आये, परन्तु ये देवता स्वयं यातना की पकड़ में होंगे, यह किसी के क्या काम आयेंगे ? इसलिए इन्हें बुरा संरक्षक तथा बुरा साथी कहा गया है। इनकी पूजा हानि ही हानि है, लाभ का तो इसमें कोई अंश ही नहीं है, फिर यह जो कहा गया है कि उनकी हानि, उनके लाभ से निकटतम है, तो यह इस प्रकार है जैसे अन्य स्थान पर कहा गया है।

﴿وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ﴾

"नि:संदेह हम (अर्थात अल्लाह के मानने वाले) अथवा तुम (उसको अस्वीकार करने वाले) सत्यमार्ग पर हैं अथवा खुले भटकावे में।" (सूर: *सबा*-२४)

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ جَنَّٰتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿١٤﴾

(१४) नि:संदेह ईमान तथा सत्कर्म करने वालों को अल्लाह (तआला) लहरें लेती हुई नहरों वाले स्वर्ग में ले जायेगा। अल्लाह जो निश्चय करे उसे करके रहता है।

مَن كَانَ يَظُنُّ أَن لَّن يَنصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ﴿١٥﴾

(१५) जिसका यह विचार हो कि अल्लाह (तआला) अपने रसूल की सहायता दोनों लोकों में न करेगा, वह ऊँचाई पर एक रस्सा बाँधकर (अपने गले में फंदा फाँस ले) और गला घूँट ले फिर देख ले कि उसकी चतुरता से वह बात हट जाती है, जो उसे तड़पा रही है।[1]

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَٰهُ آيَٰتٍ بَيِّنَٰتٍ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يُرِيدُ ﴿١٦﴾

(१६) तथा हमने इसी प्रकार इस क़ुरआन को खुली आयतों में अवतरित किया है। तथा जिसे अल्लाह चाहे मार्गदर्शन प्रदान करता है।

स्पष्ट बात है कि सत्यमार्ग पर वही हैं जो अल्लाह के मानने वाले हैं। परन्तु उसे स्पष्ट शब्दों में कहने के बजाय संकेत तथा प्रश्नात्मक वाक्यों में वर्णन किया गया है, जो सुनने वाले को अधिक प्रभावी तथा शैलीदार लगता है। अथवा इसका सम्बन्ध संसार से है तथा अर्थ यह होगा कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को पुकारने से तुरन्त हानि यह हुई कि ईमान से हाथ धो बैठा, यह निकटतम हानि है। तथा आख़िरत में तो उसकी हानि निश्चित ही है।

[1]इसके एक अर्थ तो यह किये गये हैं कि ऐसा व्यक्ति जो यह चाहता है कि अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों की सहायता न करे, क्योंकि उसके प्रभाव तथा विजय से उसको हार्दिक दुख होता है, तो वह अपने घर की छत पर रस्सी लटका कर तथा अपने गले में उसका फंदा लेकर गला घोंट कर आत्महत्या कर ले, शायद यह आत्महत्या उसे क्रोध से बचा ले, जो वह मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बढ़ते हुए प्रभाव क्षेत्र को देखकर अपने दिल में पाता है। इस स्थिति में سماء घर की छत होगी। अन्य अर्थ यह है कि वह एक रस्सा लेकर आकाश पर चढ़ जाये तथा आकाशों से जो प्रकाशना तथा सहायता आती हो, उसका क्रम समाप्त कर दे (यदि वह कर सकता है) तथा देखे कि क्या उसके हृदय को शान्ति प्राप्त हुई ? इमाम इब्ने कसीर ने प्रथम भावार्थ को तथा इमाम शौकानी ने द्वितीय भावार्थ को अधिक प्रिय समझा है तथा वाक्य क्रम से यह द्वितीय भावार्थ अधिक निकट लगता है।

(१७) ईमानवाले, तथा यहूदी एवं विधर्मी तथा इसाई एवं अग्निपूजक[1] तथा मूर्तिपूजक[2] उन सबके मध्य क़ियामत के दिन अल्लाह (तआला) स्वयं निर्णय कर देगा [3] अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु का गवाह है।[4]

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾

(१८) क्या तू नहीं देख रहा है कि अल्लाह के समक्ष नतमस्तक हैं सभी आकाशों वाले तथा धरती वाले एवं सूर्य तथा चन्द्रमा एवं सितारे तथा पर्वत एवं वृक्ष तथा जीव[5] तथा बहुत से

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ

---

[1] مجوس से तात्पर्य ईरान के अग्निपूजक हैं जो दो देवताओं में विश्वास रखते हैं। एक अंधकार उत्पन्न करने वाला है, दूसरा प्रकाश का जिसे वे अहरमन एवं यज़दाँ कहते हैं।

[2]इनमें वर्णित भटके हुए सम्प्रदायों के अतिरिक्त जितने भी अल्लाह के साझीदार बनाने का पाप करने वाले हैं, सभी आ गये।

[3]इनमें से सत्य पर कौन है, असत्य पर कौन ? यह तो उन प्रमाणों से सिद्ध हो जाता है जो अल्लाह ने अपने क़ुरआन में अवतरित किये हैं तथा अपने अन्तिम पैग़म्बर को भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भेजा था ﴿لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ﴾ (*सूर: अल-फ़तह-२८*) यहाँ निर्णय से तात्पर्य वह दण्ड है जो अल्लाह तआला क़ियामत वाले दिन असत्य के पुजारियों को देगा। इस दण्ड से भी स्पष्ट हो जायेगा कि संसार में सत्य पर कौन था तथा असत्य पर कौन ?

[4]यह निर्णय मात्र निर्णायक अधिकार की शक्ति के कारण नहीं होगा बल्कि न्याय के आधार पर होगा, क्योंकि वह सभी कुछ भली-भाँति जानता है, उसे प्रत्येक वस्तु का ज्ञान है।

[5]कुछ व्याख्याकारों ने इस सजदे से उन सभी वस्तुओं को अल्लाह के आदेशों के अधीन होना अर्थ लिया है, किसी में शक्ति नहीं कि वह अल्लाह के आदेशों की अवहेलना कर सके। उनके निकट सजदा यहाँ उपासना एवं इबादत (वंदना) के अर्थ में नहीं जो केवल बुद्धिवाले जीवितों के लिए विशेष है। जबकि कुछ व्याख्याकारों ने इसे काल्पनिक के बजाये वास्तविक अर्थ में लिया है कि प्रत्येक सृष्टि अपने-अपने रूप से अल्लाह के समक्ष सजदा कर रही है। जैसे من في السماوات से तात्पर्य फ़रिश्ते हैं و من في الارض से प्रत्येक प्रकार के जीवधारी, मनुष्य, जिन्नात, पशु तथा पक्षी एवं अन्य वस्तुयें हैं। ये सभी अपने-अपने अन्दाज़ (शैली) में सजदा एवं अल्लाह की तस्बीह (स्तुति) करते हैं। ﴿وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ﴾ (*सूर: बनी इस्राईल-४४*) सूर्य, चन्द्रमा तथा सितारों का विशेष रूप से इसलिए वर्णन

وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۩ ﴿١٨﴾ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ

मनुष्य भी।[1] हाँ बहुत से वे भी हैं जिन पर यातना सिद्ध हो चुकी है,[2] तथा जिसे प्रभु अपमानित कर दे उसे कोई सम्मान देने वाला नहीं,[3] अल्लाह जो चाहता है करता है।

(१९) ये दोनों अपने प्रभु के विषय में मतभेद रखने वाले हैं,[4] तो काफ़िरों के लिए अग्नि के

किया गया है कि मूर्तिपूजक इनकी पूजा करते रहे हैं। अल्लाह तआला ने वर्णन किया है, तुम उनको माथा टेकते हो, ये तो अल्लाह के समक्ष सजदा करने वाले तथा उसके अधीन हैं, इसलिए तुम उनको सजदा न करो, उस शक्ति को सजदा करो जो उनका स्रष्टा है। (*हा॰मीम॰सजदा-३७*) सहीह हदीस में है, आदरणीय अबूज़र का कथन है मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, जानते हो सूर्य कहाँ जाता है ? मैंने कहा अल्लाह तथा उसके रसूल उचित रूप से जानते हैं। फ़रमाया सूर्य जाता है तथा अर्श के नीचे नतमस्तक हो जाता है, फिर उसे (उदय होने का) आदेश दिया जाता है। एक समय आयेगा कि उसे कहा जायेगा, वापस लौट जा अर्थात जहाँ से आया है वहीं चला जा (सहीह बुख़ारी बदउल ख़ल्क बाब सिफ़तिश्शम्स वल क़मरे बेहुसबान तथा मुस्लिम किताबुल ईमान, बाब बयानुज़्ज़मनि अल्लज़ी ला युक़बल फ़ीहिल ईमान) इसी प्रकार एक सहाबी की घटना का वर्णन हदीस में है कि उन्होंने स्वप्न में अपने साथ वृक्ष को सजदा करते देखा। (तिर्मिज़ी अबवाबुस्सफ़रे, बाब माजाअ मायक़ूल फ़ी सजूदिल क़ुरआन तोहफ़तुल अहवज़ी भाग १, पृष्ठ ४०२, इब्ने माजा संख्या १०५३) तथा पर्वतों एवं वृक्षों के सजदा में उनकी छाया का दायें-बायें फिरना अथवा झुकना भी सम्मिलित है, जिस की ओर संकेत *सूरः रअद-१५* तथा *सूरः अल-नहल-४८* तथा ४९ में भी किया गया है।

[1]यह सजदा अधीनता एवं इबादत ही है जिसको मनुष्यों की एक बहुत बड़ी संख्या करती है तथा अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने का अधिकारी बनती है।

[2]यह वह हैं जो अधीनता के सजदा अस्वीकार करके कुफ़्र का मार्ग अपनाते हैं वरन प्राकृतिक नियमों अर्थात प्राधीनता वाले सजदे में तो उन्हें भी इंकार की शक्ति ही नहीं कि अस्वीकार करें।

[3]कुफ़्र को धारण करने का परिणाम अपमान तथा अनादर तथा आख़िरत में स्थाई यातना है, जिससे बचा कर काफ़िरों को मान देने वाला कोई नहीं होगा।

[4]﴿هَٰذَانِ خَصْمَانِ﴾ ये दोनों द्विवचन हैं। कुछ ने इससे तात्पर्य उपरोक्त पथभ्रष्ट सम्प्रदाय तथा उसके विपक्ष दूसरा सम्प्रदाय मुस्लिम लिया है। ये दोनों अपने प्रभु के विषय में झगड़ते

فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾

वस्त्र नाप कर काटे जायेंगे तथा उनके सिरों के ऊपर से गर्म पानी की धारा बहायी जायेगी।

يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾

(२०) जिससे उनके पेट की सब वस्तुयें तथा खालें गला दी जायेंगी।

وَلَهُم مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾

(२१) तथा उनके दण्ड के लिए लोहे के हथौड़े हैं।

كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾

(२२) यह जब भी वहाँ के दुख से निकल भागने की चेष्टा करेंगे, वहीं लौटा दिये जायेंगे तथा (कहा जायेगा) जलने की यातना का स्वाद चखो।[1]

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾

(२३) नि:संदेह ईमानवालों तथा सत्कर्म करने वालों को अल्लाह (तआला) उन स्वर्ग में ले जायेगा जिनके नीचे से नहरें लहरें ले रही हैं, जहाँ उन्हें स्वर्ण के कंगन पहनाये जायेंगे तथा सच्चे मोती भी। वहाँ उनका वस्त्र शुद्ध रेशम का होगा[2]।

हैं, मुसलमान तो उसके एक होने तथा उसके पुन: जीवित करने के सामर्थ्य के पक्ष में हैं, जबकि अन्य अल्लाह के विषय में विभिन्न भटकावे में पड़े हुए हैं। इस सम्बन्ध में वद्र के युद्ध में लड़ने वाले मुसलमान तथा काफ़िर भी आ जाते हैं जिसमें एक ओर आदरणीय हमज़ा, आदरणीय अली तथा आदरणीय उबैदा थे तथा दूसरी ओर उनके विपक्षी काफ़िरों में से उत्बा, शैबा तथा वलीद बिन उत्बा थे। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरतिल हज्ज) इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि ये दोनों ही भावार्थ ठीक एवं आयत के अनुसार हैं।

[1]इसमें नरक में जाने वालों की यातना का कुछ विस्तृत वर्णन किया गया है, जो उन्हें भुगतना होगा।

[2]नरकवासियों की अपेक्षा में यह स्वर्गवासियों का तथा उन सुखों का वर्णन है जो ईमानवालों को उपलब्ध कराये जायेंगे।

(२४) तथा उन्हें पवित्र वचन का मार्ग दिखा दिया गया [1] तथा अति प्रशंसित (अल्लाह के) मार्गदर्शन दिया गया ।[2]

وَهُدُوٓا۟ إِلَى ٱلطَّيِّبِ مِنَ ٱلْقَوْلِ وَهُدُوٓا۟ إِلَىٰ صِرَٰطِ ٱلْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾

(२५) जिन लोगों ने कुफ़्र किया तथा अल्लाह के मार्ग से रोकने लगे तथा वह सम्मानित मस्जिद से भी[3] जिसे हमने सभी लोगों के लिए समान कर दिया है, वहीं के वासी हों अथवा बाहर के हों[4] जो भी अत्याचार के साथ वहाँ

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ وَٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ ٱلَّذِى جَعَلْنَٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءً ٱلْعَٰكِفُ فِيهِ وَٱلْبَادِ ۚ وَمَن يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍۭ بِظُلْمٍ

[1]अर्थात स्वर्ग ऐसा स्थान है जहाँ पवित्र बातें ही होंगी, वहाँ व्यर्थ एवं पाप की बातें नहीं होंगी।

[2]अर्थात ऐसे स्थान की ओर जहाँ अल्लाह की प्रशंसा तथा महिमा की ध्वनि गूँज रही होगी। यदि इसका सम्बन्ध संसार से है तो अर्थ क़ुरआन तथा इस्लाम की ओर मार्गदर्शन है जो ईमानवालों के भाग में आती है।

[3]रोकने वालों से तात्पर्य मक्का के काफ़िर हैं, जिन्होनें ६ हिजरी में मुसलमानों को मक्का जाकर "उमरह" करने से रोक दिया था। मुसलमानों को हुदैबिया नामक स्थान से वापस आना पड़ा था।

[4]इसमें मतभेद है कि मस्जिदे-हराम (सम्मानवाली मस्जिद) से तात्पर्य विशेषरूप से मस्जिद (ख़ानये काअबा) ही है अथवा सम्पूर्ण हरम मक्का। क्योंकि क़ुरआन में कुछ स्थान पर सम्पूर्ण हरमे मक्का के लिए भी मस्जिदे हराम का शब्द प्रयुक्त हुआ है, अर्थात अंश बोलकर कुल का अर्थ लिया गया है। जहाँ तक विशेष मस्जिदे हराम का सम्वन्ध है, उसके विषय में तो इस बात पर सहमती है कि इसमें निवासी स्वदेशी अथवा विदेशी सबका भाग समान है अर्थात बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति रात-दिन के किसी भाग में इबादत कर सकता है, किसी के लिए भी किसी मुसलमान को इबादत से रोकने की आज्ञा नहीं है। परन्तु जिन धर्मगुरूओं ने मस्जिदे हराम से तात्पर्य सम्पूर्ण हरम लिया है उनके एक गुट का विचार यह है कि मक्का का पूरा हरम सभी मुसलमानों के लिए समान है तथा उसके मकानों तथा धरती का कोई स्वामी नहीं इसलिए उनके निकट उनका क्रय-विक्रय अथवा किराये पर देना उचित नहीं। जो व्यक्ति भी किसी स्थान से हज अथवा उमरह के लिए मक्का जाये तो उसे यह अधिकार है कि वह जहाँ चाहे ठहरे, वहाँ रहने वालों का कर्तव्य है कि वह उन्हें अपने घरों में ठहरने से किसी को न रोकें। दूसरा विचार यह है कि मकान तथा धरती

نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝٢٥

विपथ होने का का विचार करेगा[1] हम उसे कष्टदायी यातना का स्वाद चखायेंगे ।[2]

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَّا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا

(२६) तथा जब कि हम ने इब्राहीम के लिए कआबा घर का स्थान निर्धारण कर दिया[3] (इस प्रतिबन्ध के साथ) कि मेरे साथ किसी को

किसी विशेष व्यक्ति के स्वामित्व की वस्तु हो सकते हैं तथा उनके स्वामित्व का अधिकार अर्थात क्रय-विक्रय तथा किराये पर देना उचित है। परन्तु वह स्थान जिनका सम्बन्ध हज के कार्यक्रम पूरा करने से है जैसे मिना, मुजदलिफ़ा, अरफ़ात का मैदान यह जनसामान्य के लिए दान हैं। इनमें किसी का स्वामित्व मान्य नहीं। यह समस्या प्राचीन धर्मगुरूओं के मध्य अत्यधिक मतभेद का कारण बनी रही है। परन्तु आजकल लगभग सभी धर्मगुरू विशेष स्वामित्व के पक्ष में हो गये हैं। तथा इसमें कोई मतभेद नहीं रह गया है। मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद शफ़ी मरहूम ने भी इमाम अबू हनीफ़ा तथा धर्माचारियों को इसी का पक्षधर बताया है। (देखिये मआरिफ़ुल क़ुरआन भाग ६, पृष्ठ २५३)

[1] إِلْحَادٌ का शाब्दिक अर्थ तो विपथ होना है। यहाँ यह सामान्य है कुफ़्र तथा शिर्क से लेकर हर प्रकार के पाप के लिए। यहाँ तक कि कुछ धर्मगुरू क़ुरआनी शब्दों के आधार पर इस बात का विश्वास करते हैं कि हरम में यदि किसी प्रकार के पाप की योजना बना लेगा (चाहे उस कार्यान्वयन करे अथवा न करे) तो वह भी इस चेतावनी में सम्मिलित है। कुछ कहते हैं कि मात्र विचार के कारण पकड़ नहीं होगी, जैसाकि अन्य क़ुरआन के शब्दों से ज्ञात होता है। परन्तु यदि निश्चय कर लिया हो तो पकड़ हो सकती है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]यह बदला है उनका जो उपरोक्त पापों को करेंगे।

[3]अर्थात बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) का स्थान बता दिया तथा वहाँ इब्राहीम की सन्तान को बसा दिया। इससे ज्ञात होता है कि तूफ़ान नूह के विनाश के पश्चात ख़ानये काबा का निर्माण सर्वप्रथम आदरणीय इब्राहीम के हाथों हुआ। जैसाकि सहीह हदीस से यह बात सिद्ध है, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "सर्वप्रथम जो मस्जिद धरती पर बनायी गयी, मस्जिदे हराम है तथा उसके चालीस वर्ष पश्चात मस्जिदे अक्सा का निर्माण हुआ।" (मुसनद अहमद भाग ५ पृष्ठ १५० तथा १६६ से १ १६७ तक तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِينَ وَالْقَآئِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿٢٦﴾

सम्मिलित न करना[1] तथा मेरे घर को परिक्रमा करने, खड़े होने, झुकने (रूकूअ) तथा सजदा करने वालों के लिए शुद्ध एवं पवित्र रखना।[2]

وَأَذِّن فِى النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा लोगों में हज की घोषणा कर दे, लोग तेरे पास पैदल भी आयेंगे तथा दुबले-पतले ऊँटों पर भी[3] दूरस्थ के सभी मार्गों से आयेंगे।[4]

لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِىٓ أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّنۢ بَهِيمَةِ

(२८) अपना लाभ प्राप्त करने के लिए आ जायें[5] तथा उन निर्धारित दिनों में अल्लाह के नाम को याद करें उन चौपायों पर जो पालतू

---

[1]यह ख़ानये काबा के निर्माण का उद्देश्य वर्णन किया गया है कि इसमें केवल मेरी इबादत की जाये, इससे यह बताने का उद्देश्य है कि मूर्तिपूजकों ने इसमें जो मूर्तियाँ सजा रखी हैं, जिनकी वह यहाँ आकर पूजा करते हैं यह खुला अत्याचार है कि जहाँ केवल अल्लाह की इबादत की जानी चाहिए थी, वहाँ मूर्तियों की पूजा की जाती है।

[2]कुफ्र, मूर्तिपूजा तथा अन्य अशुद्धताओं एवं अपवित्रताओं से। वर्णन केवल नमाज़ पढ़ने वालों तथा परिक्रमा करने वालों का किया है, क्योंकि ये दोनों इबादतें ख़ानये काबा के लिए विशेष रूप से हैं, नमाज़ में मुख उसी ओर होता है तथा परिक्रमा केवल उसी के चारों ओर की जाती है परन्तु बिदअती लोगों ने अब बहुत सी क़ब्रों की परिक्रमा भी खोज ली है तथा कुछ नमाज़ों के लिए भी क़िबला कोई अन्य।

[3]जो चारे की कमी तथा यात्रा की दूरी तथा थकावट से बोझिल तथा क्षीण हो जायेंगे।

[4]यह अल्लाह तआला की शक्ति है कि मक्का के पर्वत की चोटी से गुंजने वाली यह क्षीण सी उदघोषणा दुनिया के कोने-कोने तक पहुँच गयी, जिसका दर्शन हज तथा उमरह में प्रत्येक हाजी तथा उमरह करने वाला करता है।

[5]यह धार्मिक लाभ हैं कि नमाज़, परिक्रमा तथा हज तथा उमरह के कर्मों द्वारा अल्लाह की क्षमा तथा प्रसन्नता प्राप्त की जाये। तथा सांसारिक व्यापार तथा धन्धा भी करके धन-सामग्री भी प्राप्त की जाये।

الْأَنْعَامِ ۚ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾

हैं,[1] तो तुम आप भी खाओ तथा भूखे भिक्षुकों को भी खिलाओ।

ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾

(२९) फिर वे अपना मैल-कुचैल दूर करें[2] तथा अपनी मन्नत पूरी करें[3] तथा अल्लाह के प्राचीन घर की परिक्रमा करें।[4]

ذَٰلِكَ ۖ وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ

(३०) यह है तथा जो कोई अल्लाह के निषेधाज्ञा

---

[1] بهيمة الأنعام (पालतू पशु) से तात्पर्य ऊँट, गाय तथा बकरी (एवं भेड़ तथा दुम्बे) हैं। उन पर अल्लाह का नाम लेने से अर्थ है उनका वध करना, जो अल्लाह का नाम लेकर ही किया जाता है। तथा ايام معلومات से तात्पर्य बलि दिवस أيام تشريق हैं जो १० ज़िलहिज्जा तथा तीन दिन उसके पश्चात अर्थात ११,१२ तथा १३ ज़िलहिज्जा तक क़ुर्बानी (बलि) दी जा सकती है। सामान्य रूप से ايام معلومات से तात्पर्य ज़िलहिज्जा के दस दिन तथा أيام معدودات से ११,१२ तथा १३ ज़िलहिज्जा लिये जाते हैं। फिर भी यहाँ معلومات जिन अर्थों में आया है, उस से यही ज्ञात होता है कि यहाँ १०-१३ ज़िलहिज्जा तात्पर्य हैं। و الله أعلم

[2]अर्थात १० ज़िलहिज्जा को बड़े जमर: को कंकरियाँ मारने के पश्चात पूरे बाल कटवा कर अथवा छोटे करा कर एहराम खोल दिया जाता है तथा पत्नी से सहवास करने के अतिरिक्त वे सभी कार्य उसके लिए उचित हो जाते हैं जो एहराम की अवस्था में निषेधित थे। मैल-कुचैल दूर करने का अर्थ यही है कि वह बालों तथा नाख़ूनों आदि को साफ कर लें, तेल सुगन्ध प्रयोग कर लें तथा सिले हुए वस्त्र धारण कर लें आदि।

[3]यदि कोई मनौती हुई हो, जैसे कि लोग मान लेते हैं कि यदि अल्लाह ने उस पवित्र घर के दर्शन का शुभ अवसर दिया तो अमुक पुण्य का कार्य करेंगे।

[4]अतीक का अर्थ है प्राचीन, तात्पर्य ख़ानये काबा है कि पूरा बाल मुँडवाने अथवा छोटे कराने के पश्चात طواف إفاضه (ख़ानये काबा की परिक्रमा करें) जिसे "दर्शन की परिक्रमा" भी कहते हैं, तथा यह हज का स्तम्भ है, जो अरफ़ात में तथा मुज़दलिफ़ा में ठहर कर जमर: कुब्रा (बड़े शैतान) के स्थान पर कंकरियाँ मारने के पश्चात किया जाता है। जबकि आगमन परिक्रमा कुछ के निकट वाजिब (आवश्यक) तथा कुछ के निकट सुन्नत है तथा विदाई परिक्रमा अनिवार्य सुन्नत (अथवा आवश्यक) है, जो अधिकतर ज्ञानियों के निकट किसी कारणवश समाप्त हो जाती है, जैसा कि मासिक धर्मवाली स्त्री के लिए समाप्त हो जाती है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

اللهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِنْدَ رَبِّهِ ط وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ﴿٣٠﴾

का आदर करे[1] उसके अपने लिए उसके प्रभु के पास अच्छाई है, तथा तुम्हारे लिए चौपाये पशु हलाल (मान्य) कर दिये गये सिवाय उनके जो तुम्हारे समक्ष[2] वर्णन किये गये हैं, तो तुम्हें मूर्तियों की गन्दगी से बचते रहना चाहिए[3] तथा असत्य बातों से भी परहेज़ करना चाहिये ।[4]

حُنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ط وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا

(३१) अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) को स्वीकार करते हुए[5] उसके साथ किसी को न

---

[1]इन निषेधाज्ञा से तात्पर्य हज की वह रीतियाँ हैं जिनका विवरण अभी गुज़रा है । उनके सम्मान का अर्थ उन्हें इस प्रकार अदा करना है, जिस प्रकार बताया गया है । अर्थात उनका विरोध करके इन निषेधाज्ञा की अवहेलना न करे ।

[2]"जो वर्णन किये गये हैं " का अर्थ है जिनका निषेध होना वर्णन किया जा चुका है । जैसे आयत حرمت عليكم الميتة والدم में विवरण है ।

[3] رجس का अर्थ अपवित्रता तथा मलीनता है । यहाँ इससे तात्पर्य लकड़ी, लोहा अथवा अन्य किसी वस्तु की बनी हुई मूर्तियाँ हैं । अर्थ यह है कि अल्लाह के अतिरक्त किसी अन्य की पूजा करना अपवित्रता है तथा अल्लाह के क्रोध तथा अप्रसन्नता का कारण है, इससे बचें ।

[4]असत्य बात में मिथ्या कथन के अतिरिक्त असत्य सौगन्ध खाना भी है (जिसको हदीस में शिर्क तथा माता-पिता की अवज्ञा के पश्चात तृतीय स्थान के महापाप में रखा गया है) तथा सबसे बड़ा झूठ यह है कि अल्लाह जिन वस्तुओं से पवित्र है, वह उससे सम्बन्धित की जायें, जैसे अल्लाह की सन्तान है, अमुक महात्मा अल्लाह के अधिकार में सम्मिलित हैं, अथवा अमुक कार्य पर अल्लाह तआला को किस प्रकार सामर्थ्य होगा ? जैसे काफ़िर मरने के पश्चात पुन: उठाए जाने को आश्चर्यजनक समझते हैं । अथवा अपनी ओर से अल्लाह की उचित की गयी वस्तु को निषेध तथा वर्जित को मान्य कर लेना । जैसे मूर्तिपूजक जानवरों को अपने लिए निषेध कर लेते थे । ये सब झूठ हैं । इनसे बचना अनिवार्य है ।

[5] حنفاء बहुवचन है حنيف का । जिसका शाब्दिक अर्थ है आकर्षित होना, एक ओर होना । एक पक्षीय होना । अर्थात शिर्क (मूर्तिपूजा) से एकेश्वरवाद (तौहीद) की ओर और कुफ़्र

خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخۡطَفُهُ الطَّيۡرُ أَوۡ تَهۡوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٖ سَحِيقٖ ﴿٣١﴾

साझी बनाते हुए ।(सुनो !) अल्लाह का साझी बनाने वाला जैसे आकाश से गिर पड़ा, अब या तो उसे पक्षी उचक ले जायेंगी अथवा हवा किसी दूरस्थ स्थान पर फेंक देगी ।[1]

ذَٰلِكَۖ وَمَن يُعَظِّمۡ شَعَٰٓئِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِن تَقۡوَى الۡقُلُوبِ ﴿٣٢﴾

(३२) यह सुन लिया, (और सुनो,) अल्लाह की निशानियों (प्रतीकों) का जो सम्मान तथा आदर करे, तो उसके दिल की परहेज़गारी के कारण यह है ।[2]

तथा असत्य से इस्लाम तथा सत्य धर्म की ओर आकर्षित होते हुए। अथवा एक पक्षीय होकर शुद्ध रूप से अल्लाह की इबादत (उपासना) करते हुए।

[1]अर्थात जिस प्रकार बड़े पक्षी, छोटे जीव को अति तीब्रता से झपटकर नोच खाते हैं अथवा हवायें किसी को दूरस्थ स्थानों पर ले जाकर फेंक दें तथा किसी को उसकी सूचना न मिले । दोनों परस्थितियों में विनाश उसके भाग्य में है। उसी प्रकार वह व्यक्ति जो एक अल्लाह की इबादत करता है, वह सही स्वभाव एवं आत्मिक पवित्रता के अनुसार पवित्रता एवं स्वच्छता के शिखर पर आसीन होता है तथा जैसे ही वह शिर्क का कार्य करता है, तो जैसे कि अपने आपको उच्च स्थान से नीचे तथा सफाई से गन्दगी तथा कीचड़ में गिरा लेता है।

[2] شَعَائِر बहुवचन है شَعِيرَة का, जिसका अर्थ संकेत तथा निशानी है, जैसे युद्ध में एक संकेत (विशेष शब्द लक्षण एवं संकेत के रूप में) प्रयोग कर लिया जाता है, जिससे वे आपस में एक-दूसरे को पहचान लेते हैं। इस आधार पर अल्लाह की निशानियाँ वे हैं जो धार्मिक संकेत अर्थात इस्लाम का स्पष्ट अनुकरणीय आदेश हैं, जिससे एक मुसलमान का अस्तित्व एवं व्यक्तितत्व स्थापित होता है तथा अन्य धर्म के अनुयायिओं से अलग पहचान लिया जाता है। सफ़ा तथा मरवह पर्वतों को भी इसीलिए अल्लाह की निशानियाँ कहा गया है कि मुसलमान हज तथा उमरह में इनके मध्य सई करते (दौड़ते) हैं । यहाँ हज की अन्य रीतियों विशेष रूप से क़ुर्बानी (बलि) के पशुओं को अल्लाह की निशानी कहा गया है। उनके आदर का अर्थ उनका अच्छा तथा मोटा करना है अर्थात स्वस्थ एवं मोटे जानवर की बलि देना। इस सम्मान को अल्लाह का हार्दिक भय कहा गया है अर्थात यह हृदय के उन कर्मों में से है जिनका आधार (संयम) अल्लाह का भय है।

لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ إِلَى ٱلْبَيْتِ ٱلْعَتِيقِ ﴿٣٣﴾

(३३) उनमें तुम्हारे लिए एक निर्धारित समय तक के लिए लाभ है[1] फिर उनके बलि चढ़ाने का स्थान (वेदी) ख़ानये काबा है।[2]

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا لِّيَذْكُرُوا۟ ٱسْمَ ٱللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّنۢ بَهِيمَةِ ٱلْأَنْعَٰمِ ۗ فَإِلَٰهُكُمْ

(३४) तथा प्रत्येक सम्प्रदाय के लिए हमने बलि की विधि निर्धारित किया है ताकि वे उन चौपाये पशुओं पर अल्लाह का नाम लें, जो अल्लाह ने उन्हें दे रखा है।[3] (समझ लो)

---

[1]वह लाभ सवारी, दूध, जन्तु की अधिकता तथा ऊन (रोम) आदि की प्राप्ति है। निर्धारित समय से तात्पर्य बलि देने का दिन है अर्थात बलि देने के समय तक तुम्हें उक्त लाभ होते हैं, इससे ज्ञात हुआ कि बलि के पशु से जब तक वह बलि न चढ़ा दिया जाये, लाभ उठाना मान्य है। सहीह हदीस से भी इसकी पुष्टि होती है। एक व्यक्ति अपने साथ एक बलि का पशु हाँके लिए जा रहा था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे फ़रमाया : इस पर सवार हो जा, उसने कहा कि यह हज की बलि के लिए है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस पर सवार हो जा। (सहीह बुख़ारी कितावुल हज्ज बाब रूकूबिलबुदन)

[2]हलाल (उचित) होने से तात्पर्य जहाँ इनकी बलि करना (उचित) है। अर्थात यह पशु हज के कार्यक्रम पूरे करने के पश्चात, बैतुल्लाह तथा मक्का की हरम की सीमा में पहुँचते हैं तथा वहाँ अल्लाह के नाम पर बलि दे दिये जाते हैं, तो उपरोक्त लाभ क्रम भी समाप्त हो जाता है। तथा यदि वे वैसे ही हरम के लिए बलि होते हैं तो हरम पहुँचते ही बलि चढ़ा दिये जाते हैं तथा मक्का के निर्धनों में उनका माँस विभाजित कर दिया जाता है।

[3] نسك ينسك ، منسك का उदगम है, अर्थ है अल्लाह की समीपता के लिए बलि देना। ذبيحة (जवीहा) (बलि दिये पशु) को भी نسيكة कहा जाता है, जिसका बहुवचन نُسك है। इसका अर्थ आज्ञापालन तथा इबादत (आराधना) के भी है। क्योंकि अल्लाह की प्रसन्नता के लिए पशुओं की बलि भी इबादत है। इसीलिए अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के नाम पर अथवा उनकी प्रसन्नता के लिए पशु की बलि अल्लाह के अतिरिक्त उस अन्य की इबादत है। अथवा مَنْسك (सीन अरबी अक्षर पर अरबी वर्णमाला के स्वर में 'अ' की मात्रा अथवा 'इ' की मात्रा के साथ) स्थान सूचक रूप है। अर्थात बलिस्थल अथवा इबादत करने का स्थान। उसी से हज की रीतियाँ हैं अर्थात वे स्थान, जहाँ हज के कर्मकांड अदा किये जाते हैं जैसे अरफ़ात, मुज़्दलिफ़ा, मिना तथा मक्का। हज के साधारण कर्मकान्ड को भी रीति कह लिया जाता है। आयत का प्रयोजन है कि हम पूर्व में भी प्रत्येक धर्मावलम्बियों के लिए बलि चढ़ाने का अथवा इबादत करने की विधि

إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَلَهُۥٓ أَسْلِمُوا۟ ۗ وَبَشِّرِ ٱلْمُخْبِتِينَ ﴿٣٤﴾

तुम सब का सत्य पूज्य मात्र एक ही है, तुम उसी के अधीन तथा आज्ञाकारी बन जाओ। विनम्रता करने वालों को शुभसूचना दे दीजिए।

ٱلَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ ٱللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَٱلصَّٰبِرِينَ عَلَىٰ مَآ أَصَابَهُمْ وَٱلْمُقِيمِى ٱلصَّلَوٰةِ وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) उन्हें कि जब अल्लाह का वर्णन किया जाये उनके हृदय काँप जाते हैं, उन्हें जो विपदा पहुँचे उस पर धैर्य रखते हैं, नमाज़ स्थापित करने वाले हैं तथा जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है, वे उसमें से भी देते रहते हैं।

وَٱلْبُدْنَ جَعَلْنَٰهَا لَكُم مِّن شَعَٰٓئِرِ ٱللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۖ فَٱذْكُرُوا۟ ٱسْمَ ٱللَّهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۖ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا۟ مِنْهَا

(३६) बलि के ऊँट को[1] हम ने तुम्हारे लिए अल्लाह (तआला) के चिन्ह निर्धारित कर दिये हैं उनमें तुम्हें लाभ है। तो उन्हें खड़ा कर के उन पर अल्लाह का नाम पढ़ो।[2] फिर जब उनके पहलु (पार्शव) धरती से लग जायें[3] तो उसे

निर्धारित करते रहे हैं ताकि वह उसके द्वारा अल्लाह की निकटता प्राप्त करते रहें। तथा उसमें रहस्य यह है कि वे हमारा नाम लें, अर्थात "बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर" कहकर बलि दें अथवा हमें याद रखें।

[1] بُـــدْنٌ बहुवचन है بدنة का। यह जानवर सामान्यत: मोटा-ताज़ा होता है इसलिए بدنة कहा जाता है। मोटा-ताज़ा जानवर, भाषाविदों ने इसे केवल ऊँटों के साथ विशेष रूप से प्रयोग किया है, परन्तु हदीस के अनुसार गाय के लिए भी بدنة शब्द का प्रयोग उचित है। अर्थ यह है कि ऊँट तथा गाय जो बलि चढ़ाने के लिये ले जायें। वह भी अल्लाह की निशानी है, अर्थात अल्लाह के उन आदेशों में से है जो मुसलमानों के लिए विशेष तथा उनके लक्षण हैं।

[2] صَوَافٌّ، مصفوفةٌ (पंक्तिबद्ध अर्थात खड़े हुए) के अर्थ में है। ऊँट को इसी प्रकार खड़े-खड़े वध किया जाता है कि बायाँ हाथ पैर उसका बँधा हुआ हो तथा तीन पैर पर वह खड़ा होता है।

[3] अर्थात सारा रक्त निकल जाये तथा वह निष्प्राण होकर धरती पर गिर जाये तब उसे काटना प्रारम्भ करो। क्योंकि जीवित जानवर का मांस काट कर खाना निषेध है।

«مَا قُطِعَ مِنَ الْبَهِيمَةِ وَهِيَ حَيَّةٌ، فَهُوَ مَيْتَةٌ».

स्वयं भी खाओ[1] तथा निर्धन भिखारी तथा जो भिखारी न हो उसे भी खिलाओ,[2] इसी प्रकार

وَأَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذَٰلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ

"जिस जानवर से उस अवस्था में माँस काटा जाये कि वह जीवित हो तो वह (काटा हुआ माँस) मृत (तथा निषेध) है।" (अबूदाऊद किताबुल सैद, तिर्मिज़ी अबवाबुस्सैद, बाब माजाअ मा कुतिअ मिनल हय्ये फ़हुवा मय्येतुन, इब्ने माजा)

[1]कुछ आलिमों के निकट यह आदेश आवश्यक है अर्थात बलि का माँस खाना, क़ुर्बानी करने वाले के लिए आवश्यक (वाजिब) है तथा अधिकतर आलिमों के निकट यह आदेश अच्छाई के लिए है अथवा औचित्य है अर्थात यदि खा लिया जाये तो उचित अथवा प्रिय है तथा कोई न खाये बल्कि पूरा का पूरा विभाजित कर दे तो कोई पाप नहीं।

[2] قانع का एक अर्थ भिखारी (याचक) के तथा दूसरा अर्थ संतोष करने वाले के किये गये हैं अर्थात वह प्रश्न न करे तथा مُعْتَرّ का अर्थ कुछ ने बिना याचना के समक्ष आने वाले के किये हैं। तथा कुछ ने قانع का अर्थ माँगने वाले तथा مُعْتَر का अर्थ दर्शक अर्थात मिलने वाले के किये हैं। इस आयत से भावार्थ निकालते हुए कहा जाता है कि बलि के माँस के तीन भाग किये जायें : एक अपने लिए, दूसरा मिलने वालों के लिए तथा सम्बन्धियों के लिए तथा तीसरा भाग भिक्षुकों, प्रश्नकर्ताओं तथा समाज के आवश्यकता वाले लोगों के लिए। जिसकी पुष्टि में यह हदीस प्रस्तुत की जाती है जिसमें रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "मैंने तुम्हें (प्रथम में) तीन दिन से अधिक बलि के माँस भण्डार करके रखने के लिए मना किया था, परन्तु अब आज्ञा है कि खाओ तथा जो उचित समझो भण्डार करो।" "दूसरे कथन के शब्द हैं, तो खाओ, भण्डार करो तथा दान करो।" एक अन्य कथन के शब्द इस प्रकार हैं, "तो खाओ, खिलाओ एवं दान करो।" (अलबुख़ारी किताबुल अदाही, मुस्लिम किताबुल अदाही, बाबु ब्याने मा कान मिनल नहये अन अकलिल लहूमिल अदाही बाद सलास ... वससुनन) कुछ आलिम दो भाग करने के पक्ष में हैं। आधा अपने लिए आधा दान के लिए, वह इससे विगत् आयत ﴿فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ﴾ से भावार्थ निकालते हैं। परन्तु वास्तव में किसी भी हदीस से इस प्रकार दो अथवा तीन भागों में विभाजित करने का आदेश नहीं निकलता, अपितु उनमें समान्यत: खाने-खिलाने का आदेश है। अत: इस साधारणता को अपने स्थान पर स्थाई रहना चाहिए तथा किसी विभाजन के लिए बाध्य नहीं बनाना चाहिए। परन्तु बलि के पशुओं की खालों के विषय में एकमत हैं कि इसे या तो अपने प्रयोग में लाओ अथवा दान करो, इसे विक्रय करने की आज्ञा नहीं है। जैसाकि हदीस में है (मुसनद अहमद भाग ४\१५) परन्तु कुछ आलिमों ने चर्म को स्वयं विक्रय करके उसका मूल्य निर्धनों को बाँट देने की आज्ञा दी है। (इब्ने कसीर)

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٣٦﴾

हमने चौपाये को तुम्हारे अधीन कर दिया है कि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो।

لَن يَنَالَ اللَّهَ لُحُومُهَا وَلَا دِمَاؤُهَا وَلَٰكِن يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٧﴾

(३७) अल्लाह (तआला) को बलि के माँस नहीं पहुँचते, न उनके रक्त बल्कि उसे तो तुम्हारी हार्दिक परहेज़गारी पहुँचती है। उसी प्रकार अल्लाह ने उन पशुओं को तुम्हारा आज्ञाकारी कर दिया है कि तुम उसके मार्गदर्शन (की कृतज्ञता) में उसकी महिमा का वर्णन करो

एक आवश्यक स्पष्टीकरण : बलि चढ़ाने का यह वर्णन हज की समस्या के साथ आया है, जिससे हदीस को अस्वीकार करने वाले यह अर्थ निकालते हैं कि बलि चढ़ाना मात्र हाजियों के लिए ही है अन्य मुसलमानों के लिए कोई आवश्यक नहीं। परन्तु यह बात उचित नहीं। क़ुर्बानी करने के सम्बन्ध में सामान्य आदेश भी अन्य स्थान पर है।

﴿ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴾

"अपने प्रभु के लिए नमाज़ पढ़ तथा क़ुर्बानी कर।" (*सूर: अल-कौसर*)

इसका स्पष्टीकरण तथा व्याख्या (व्यवहारिक) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं मदीने में प्रत्येक वर्ष १० ज़िलहिज्जा को बलि करते रहे तथा मुसलमानों को भी क़ुर्बानी (बलि) करने के लिए वल देते रहे। अत: सहाबा भी करते रहे। इसके अतिरिक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बलि देने के सम्बन्ध में अन्य बहुत से निर्देश दिये। वहाँ यह भी फ़रमाया कि १० ज़िलहिज्जा को हम सर्वप्रथम (ईद) की नमाज पढ़ें तथा उसके पश्चात जाकर जानवर की बलि दें, फ़रमाया : जिसने नमाज़ (ईद) से पूर्व अपनी बलि दे दी, उसने माँस खाने में शीघ्रता की, उसकी बलि नहीं हुई। (सहीह बुख़ारी किताबुल ईदैन बाबुल तवकीर इलल ईद, तथा मुस्लिम किताबुल अदाही) इससे भी स्पष्ट है कि बलि चढ़ाने का आदेश प्रत्येक मुसलमान के लिए है, वह जहाँ भी हो। क्योंकि हाजी तो ईदुल अदहा की नमाज़ ही नहीं पढ़ते जिससे यह स्पष्टरूप से प्रलक्षित होता है कि यह आदेश हाजियों के अतिरिक्त के लिए ही है। फिर भी यह आवश्यक नहीं है सुन्नत मोअक्किदा है। इसी प्रकार दिखलावे के विचार से की गयी कई-कई बलि करने की रीति भी सुन्नत के विरुद्ध है। हदीस के अनुसार घर के प्रत्येक व्यक्ति की ओर से एक जानवर की बलि पर्याप्त है। सहाबा का कर्म इसी के अनुसार था। (तिर्मिज़ी अबवाबुल अदाही, वाब माजाअ अन्नश्शातल वाहिदति तुज़्ज़ी, अन अहलिल बैत, व इब्ने माजा)

तथा पुण्य कार्य करने वालों को शुभसूचना सुना दीजिए।

إِنَّ اللَّهَ يُدَافِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٨﴾

(३८) (सुन रखो !) निःसंदेह सच्चे ईमानवालों के शत्रुओं को अल्लाह (तआला) स्वयं हटा देता है।[1] कोई विश्वासघाती कृतघ्न अल्लाह (तआला) को प्रिय नहीं।

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

(३९) जिन (मुसलमानों) से (काफ़िर) युद्ध कर रहे हैं उन्हें भी लड़ने की आज्ञा प्रदान की जाती है क्योंकि वे पीड़ित हैं,[2] निःसंदेह उनकी सहायता के लिए अल्लाह पूर्ण सामर्थ्य रखता है।

الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِم بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ

(४०) ये वे हैं जिन्हें अकारण अपने घरों से निकाला गया, केवल उनके इस कथन पर कि हमारा प्रभु केवल अल्लाह है। यदि अल्लाह

---

[1]जिस प्रकार ६ हिजरी में काफ़िरों ने अपने प्रभाव के कारण मुसलमानों को मक्का जाकर उमरह नहीं करने दिया, अल्लाह तआला ने दो वर्ष के पश्चात ही काफ़िरों के इस प्रभाव को समाप्त कर मुसलमानों से उनके शत्रु को हटा दिया तथा मुसलमानों को उन पर प्रभावशाली बना दिया।

[2]अधिकतर पूर्व धर्मावलम्बियों का कथन है कि इस आयत से सर्वप्रथम धर्मयुद्ध का आदेश दिया गया है, जिस के दो उद्देश्य वर्णन किये गये हैं, नृशंसता का निवारण तथा अल्लाह के आदेश का प्रभुत्व। इसलिए कि नृशंसित की सहायता तथा उनका समर्थन न किया जाये, तो फिर दुनिया में शक्तिशाली शक्तिहीन को तथा साधन प्राप्त लोग साधनहीन को जीवित ही न रहने देंगे, जिससे धरती आतंक एवं उपद्रव से भर जायेगी। इसी प्रकार अल्लाह के आदेशों को उच्च करने के लिए प्रयत्न न किया जाये तथा असत्य का सिर न कुचला जाये तो असत्य के प्रभाव से भी दुनिया की शान्ति व्यवस्था तथा अल्लाह के नाम लेने वालों के लिए कोई इबादत का स्थान शेष न रहेगा। (अधिक व्याख्या के लिए देखिये सूरः बक़रः आयत २५१ की व्याख्या)। صوامع (صومعة का बहुवचन) से छोटे गिरजाघर तथा بيع (بيعة का बहुवचन) से बड़े गिरजाघर, صلوات से यहूदियों के पूजास्थल तथा مساجد से मुसलमानों की इबादत के स्थान तात्पर्य हैं।

بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللهِ كَثِيرًا ۗ وَلَيَنْصُرَنَّ اللهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٤٠﴾

(तआला) लोगों को आपस में एक-दूसरे से न हटाता रहता तो इबादत के स्थान तथा गिरजाघर, तथा मस्जिदें, तथा यहूदियों की पूजा स्थली तथा वे मस्जिदें भी ध्वस्त कर दी जातीं, जहाँ अल्लाह का नाम अधिकता से लिया जाता है। जो अल्लाह की सहायता करेगा अल्लाह भी उसकी अवश्य सहायता करेगा, नि:संदेह अल्लाह (तआला) अत्यन्त शक्तिशाली, एवं प्रभावशाली है।

اَلَّذِينَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ

(४१) ये वे लोग हैं कि यदि हम इनके पैर धरती पर दृढ़ कर दें तो यह नियमित रूप से नमाज़ अदा करेंगे तथा ज़कात देंगे तथा अच्छे कार्यों का आदेश देंगे तथा बुरे कर्मों से मना करेंगे[1]

---

[1]इस आयत में इस्लामी राज्य के आधारभूत लक्ष्य तथा उद्देश्य वर्णन किये गये हैं, जिन्हें ख़िलाफ़त राशिदा तथा प्रथम काल के अन्य इस्लामी राज्यों में लागू किया गया तथा उन्होंने अपने प्राविधान में इनको प्राथमिकता दी। जिसके कारण उन के राज्यों में शान्ति थी, प्रेम भावना एवं खुशहाली भी रही तथा मुसलमानों के सिर ऊँचे तथा सम्मानित भी थे। आज भी सऊदी अरब की सरकार इन बातों का प्रबन्ध करती है, तो उसके कारण वह अब भी शान्ति व्यवस्था में संसार के सभी देशों के लिए एक अनुपम सरकार है। आजकल इस्लामी देशों में कल्याणकारी सरकार की स्थापना का बड़ा प्रचार है तथा प्रत्येक आने वाला शासक इसका दावा करता है। परन्तु प्रत्येक इस्लामी देश में अशान्ति, उपद्रव, हत्या तथा पतन प्रतिदिन का कार्य है। इसका कारण यह है कि सभी अल्लाह के बताये हुए मार्ग को अपनाये बिना पाश्चात्य देशों के गणतन्त्र एवं धर्मनिरपेक्षता के नियमों के आधार पर उत्थान तथा सफलता की आशा करते हैं, जो आकाश में तारे तोड़ने तथा वायु को मुट्ठी में बन्द कर लेने के समान है। जब तक इस्लामी राज्य क़ुरआन के बताये गये नियमों के अनुसार नमाज़ की स्थापना तथा ज़कात के भुगतान के साथ-साथ अच्छाई का आदेश देना तथा बुराई से रोकने का कार्य नहीं करेंगे तथा अपने वरीयता क्रम में इनको प्रमुखता नहीं देंगे, वे कल्याणकारी सरकार के गठन में सफल नहीं होंगे।

وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٤١﴾

और सभी कार्यों का परिणाम अल्लाह के अधिकार में है ।[1]

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودُ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा यदि ये लोग आपको झुठलायें (तो आश्चर्य की बात नहीं) तो इनसे पूर्व नूह के समुदाय तथा आद एवं समूद ।

وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा इब्राहीम के समुदाय तथा लूत के समुदाय ।

وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ ۖ وَكُذِّبَ مُوسَىٰ فَأَمْلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٤﴾

(४४) तथा मदयन वाले भी अपने-अपने नबियों को झुठला चुके हैं । मूसा भी झुठलाये जा चुके हैं, तो मैंने काफ़िरों को थोड़ा सा अवसर दिया फिर धर पकड़ा ।[2] फिर मेरा प्रकोप कैसा हुआ ?[3]

---

[1]अर्थात प्रत्येक बात का केन्द्र अल्लाह का आदेश तथा उसका प्रबन्ध ही है । उसके आदेश के बिना अखिल जगत में एक पत्ता भी हिल नहीं सकता । क्योंकर कोई अल्लाह के आदेशों तथा नियमों से मुख फेर कर वास्तविक कल्याण तथा सार्थकता प्राप्त कर सकता है ।

[2]इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि यह मक्का के काफ़िर यदि आपको झुठला रहे हैं तो यह कोई नई बात नहीं है । प्राचीन काल के समुदाय भी अपने पैग़म्बरों के साथ ऐसा ही व्यवहार करते रहे हैं तथा मैं भी उन्हें अवसर देता रहा तथा जब उनके अवसर का समय समाप्त हो गया, तो उन्हें सत्यानाश कर दिया गया । इसमें मक्का के काफ़िरों के लिए चेतावनी एवं संकेत है कि झुठलाने के उपरान्त अभी तक तुम अल्लाह की पकड़ से सुरक्षित बचे हुए हो,तो यह समझ न लेना कि तुम्हें कोई पकड़ने तथा पूछने वाला नहीं । अपितु यह अल्लाह की ओर से अवसर है, जो प्रत्येक समुदाय को दिया जाता है । परन्तु वह इस अवसर से लाभ उठा कर आज्ञा- पालन तथा आज्ञाकारिता का मार्ग नहीं अपनाते तो फिर उसे बर्बाद अथवा मुसलमानों के द्वारा पराजित कर उन्हें अपमानित तथा निरादर कर दिया जाता है ।

[3]अर्थात किस प्रकार मैंने उन्हें अपने उपकारों से वंचित करके प्रकोप तथा विनाश के द्वार पर पहुँचा दिया ।

فَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَقَصْرٍ مَّشِيدٍ ﴿٤٥﴾

(४५) बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने ध्वस्त कर दिया, इसलिए के वे अत्याचारी थे, तो वे अपनी छतों के बल औंधी पड़ी हैं। तथा बहुत से आबाद कुऐं बेकार पड़े हैं तथा बहुत से पक्के तथा ऊँचे दुर्ग निर्जन (सुनसान) पड़े हैं।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَٰكِن تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ﴿٤٦﴾

(४६) क्या उन्होंने धरती में भ्रमण करके नहीं देखा, जो उनके दिल इन बातों के समझते अथवा कानों से ही इन (घटनाओं) को सुन लेते, बात यह है कि केवल आँखें ही अंधी नहीं होतीं, अपितु वे दिल अंधे हो जाते हैं, जो सीनों में हैं।[1]

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ وَإِنَّ يَوْمًا عِندَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा वे यातना की आपसे शीघ्र माँग कर रहे हैं, अल्लाह (तआला) कदापि अपना वचन नहीं टालेगा, हाँ निश्चय ही आपके प्रभु के निकट एक दिन आप की गणना के अनुसार एक हज़ार वर्ष का है।[2]

---

[1]तथा जब कोई समुदाय गुमराही के इस स्थान पर पहुँच जाये कि शिक्षा ग्रहण करने की योग्यता भी खो बैठे तो मार्गदर्शन के बजाय विगत् समुदायों की भाँति अपमान तथा विनाश उनका भाग्य हो जाता है। आयत में क्रिया تعقل को हृदय का कार्य कहा गया है, जिससे यह अर्थ निकाला गया है कि बुद्धि का स्थान हृदय है तथा कुछ कहते हैं कि बोध का स्थान मस्तिष्क है। कुछ कहते हैं कि इन दोनों बातों में कोई प्रतिकूलता नहीं है, इसलिए कि समझ तथा विचार के लिए हृदय तथा मस्तिष्क दोनों का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। (फ़तहुल क़दीर, ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2]इसलिए कि ये लोग अपनी गणना के अनुसार शीघ्रता कर रहे हैं। परन्तु अल्लाह तआला की गणना के अनुसार एक दिन भी हज़ार वर्ष का है। इस आधार से वह यदि किसी को एक दिन (२४ घण्टे) का अवसर दे तो हज़ार वर्ष, आधे दिन का अवसर दे तो पाँच सौ वर्ष, ६ घंटे (जो चौबीस घंटे का चौथाई है) अवसर दे तो ढाई सौ वर्ष की अवधि यातना के लिए आवश्यक है وهلم جرا, इस प्रकार अल्लाह की ओर से किसी को एक घंटे का अवसर मिल जाने का अर्थ लगभग चालीस वर्ष का अवसर है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

(४८) तथा बहुत से अन्याय करने वाली बस्तियों को हमने ढील दी, फिर अन्त में उन्हें पकड़ लिया, तथा मेरी ही ओर लौटकर आना है ।[1]

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَإِلَيَّ الْمَصِيرُ ﴿٤٨﴾

(४९) घोषणा कर दो कि हे लोगो ! मैं तुम्हें खुल्लम-खुल्ला सचेत करने वाला हूँ ।[2]

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٤٩﴾

(५०) तो जो ईमान लाये हैं तथा सत्कर्म किये हैं उन्हीं के लिए मोक्ष है तथा सम्मानित जीविका ।

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٥٠﴾

(५१) तथा जो लोग हमारी आयतों को नीचा देखाने में लगे हैं,[3] वही नरकवासी हैं ।

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٥١﴾

एक अन्य अर्थ यह है कि अल्लाह के सामर्थ्य में एक दिन तथा हज़ार वर्ष समान है । इस लिए पूर्व तथा विलम्ब में कोई अन्तर नहीं पड़ता, यह शीघ्र माँगते हैं, वह देर करता है, परन्तु यह बात तो निश्चित है कि वह अपना वादा अवश्य पूरा करके रहेगा । तथा कुछ ने इसे आख़िरत की ओर संकेत माना है कि अत्यधिक भयानकता के कारण क़ियामत का एक दिन हज़ार वर्ष बल्कि किसी-किसी को पचास हज़ार वर्ष का लगेगा । तथा कुछ ने कहा कि आख़िरत (प्रलय) का दिन वास्तव में हज़ार वर्ष का होगा ।

[1]इसलिए यहाँ अवसर देने के नियम का पुन: वर्णन किया है कि मेरी ओर से यातना में चाहे जितनी देर हो, परन्तु मेरी पकड़ से कोई बच नहीं सकता, न कहीं भाग सकता है, उसे लौटकर अन्त में मेरे ही पास आना है ।

[2]यह काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों की यातना की माँग पर कहा जा रहा है कि मेरा कार्य तो सतर्क करना तथा शुभसूचना पहुँचाना है । यातना देना अल्लाह का कार्य है, वह शीघ्र पकड़ कर ले अथवा देरी करे, वह अपनी इच्छा तथा योजना के अनुसार यह कार्य करता है जिसका ज्ञान भी अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं है । इस सम्बोधन से सम्बोधित मूलत: मक्का के मूर्तिपूजक हैं, परन्तु चूँकि आप समस्त मानव जगत के लिए मार्गदर्शक तथा रसूल (संदेशवाहक) बनकर आये थे, इसलिए सम्बोधन يا أيها الناس (हे लोगों) के शब्दों से किया गया है, इसमें क़ियामत तक आने वाले वे समस्त काफ़िर तथा मूर्तिपूजक आ गये जो मक्का के काफ़िरों की भाँति रीति अपनायेंगे ।

[3] معجزين का अर्थ है यह विचार करते हुए कि हमें विवश कर देंगे, थका देंगे तथा हम उनकी पकड़ करने का सामर्थ्य नहीं रखेंगे । इसलिए कि वह मृत्यु के पश्चात खड़े किये जाने तथा हिसाब-किताब को नहीं मानते थे ।

(५२) तथा हमने आपसे पूर्व जिस रसूल तथा नबी को भेजा (उसके साथ यह हुआ कि) जब वह अपने हृदय में कोई कामना करने लगा, शैतान ने उसकी कामना में कुछ मिला दिया, तो शैतान की मिलावट को अल्लाह (तआला) दूर कर देता है, फिर अपनी बातें दृढ़ कर देता है।[1] अल्लाह (तआला) ज्ञानी तथा गुणज्ञ है।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّآ إِذَا تَمَنَّىٰٓ أَلْقَى ٱلشَّيْطَٰنُ فِىٓ أُمْنِيَّتِهِۦ فَيَنسَخُ ٱللَّهُ مَا يُلْقِى ٱلشَّيْطَٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ ٱللَّهُ ءَايَٰتِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٢﴾

(५३) यह इसलिए कि शैतानी मिलावट को अल्लाह (तआला) उन लोगों की परीक्षा का साधन बना दे, जिनके दिलों में रोग है तथा

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِى ٱلشَّيْطَٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَٱلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ۗ

---

[1] تمنى का एक अर्थ कामना की अथवा मन में सोचा। दूसरा अर्थ है पढ़ा अथवा पाठ किया। इसी आधार पर أمنية का अनुवाद कामना, विचार अथवा पाठ होगा। प्रथम अर्थ के आधार पर भावार्थ होगा, उसकी कामना में शैतान ने बाधायें डाली ताकि वे पूरी न हों। तथा रसूल एवं नबी की कामना यही होती है कि लोग अधिक से अधिक संख्या में ईमान लायें। शैतान बाधायें डालकर अधिक से अधिक लोगों को ईमान से दूर रखता है। द्वितीय अर्थ के आधार पर भावार्थ होगा कि जब भी अल्लाह का रसूल अथवा नबी प्रकाशना द्वारा प्राप्त कथन को पढ़ता तथा उसका पाठ करता है, तो शैतान उसके पाठ में अपनी बातें मिलाने का प्रयत्न करता है। अथवा उसके सम्बन्ध में लोगों के हृदय में शंका तथा संदेह उत्पन्न करता तथा त्रुटियाँ निकालने का प्रयत्न करता है। अल्लाह तआला शैतान की बाधाओं को दूर करके अथवा पाठ में मिलावट करने के प्रयत्न को असफल करके अथवा शैतान द्वारा उत्पन्न किये गये संदेह का निवारण करके अपनी बात की अथवा अपनी आयतों को दृढ़ता प्रदान करता है। इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि शैतान का यह कार्य केवल आपके साथ नहीं है। आपसे पूर्व जो भी नबी अथवा रसूल आये सभी के साथ यही कुछ करता रहा है। तो आप घबरायें नहीं, शैतान की इन उद्दण्डता तथा षड़यन्त्रों से जिस प्रकार आपसे पूर्व के नबियों को हम सुरक्षित रखते रहे हैं, निःसंदेह आप को भी सुरक्षित रखेंगे तथा शैतान की कामना के विपरीत अपनी बात पक्की करके रहेंगे। यहाँ पर कुछ व्याख्याकारों ने غرانيق على की कथाओं का वर्णन किया है जो शोधकर्ताओं के निकट सिद्ध ही नहीं है। इसलिए उसे यहाँ प्रस्तुत करने की कोई आवश्यकता नहीं समझी गयी है।

وَإِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ۝٥٣

जिनके हृदय कठोर हैं ।[1] निःसंदेह पापी लोग घोर विरोध में हैं ।

وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٥٤

(५४) तथा इसलिए भी कि जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है, वे विश्वास कर लें कि यह आपके प्रभु ही की ओर से पूर्ण सत्य है, फिर वे उस पर ईमान लायें तथा उनके दिल उसकी ओर झुक जायें ।[2] निःसंदेह अल्लाह (तआला) ईमानवालों को सत्यमार्ग की ओर मार्गदर्शन करने वाला ही है ।[3]

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ

(५५) तथा काफ़िर उस अल्लाह की प्रकाशना में सदैव संदेह तथा शंका ही करते रहेंगे यहाँ तक कि सहसा उनके सिर पर क़ियामत (प्रलय)

---

[1]अर्थात शैतान की यह गतिविधियाँ इसलिए हैं कि लोगों को भटकाये तथा उसके जाल में वे लोग फंस जाते हैं, जिनके दिलों में कुफ़्र (अविश्वास) तथा द्वयवाद का रोग होता है अथवा पाप करके उनके हृदय कठोर हो चुके होते हैं ।

[2]अर्थात यह शैतानी वाक्य जो वास्तव में शैतानी अपहरण है, यदि यह द्वयवादी एवं संदेह करने वाले लोग तथा काफ़िर एवं मूर्तिपूजक लोग के पक्ष में उपद्रव का साधन है तो दूसरी ओर जो ज्ञानी एवं तत्वज्ञ हैं, उनके ईमान तथा विश्वास में वृद्धि हो जाती है तथा वे समझ जाते हैं कि अल्लाह की उतारी बात अर्थात क़ुरआन सत्य है, जिससे उनके दिल अल्लाह के समक्ष झुक जाते हैं ।

[3]दुनिया में भी तथा आख़िरत में भी । दुनिया में इस प्रकार कि उनका मार्गदर्शन सत्य की ओर कर देता है तथा उसको स्वीकार करने तथा पालन करने का सौभाग्य प्रदान करता है । असत्य की समझ भी उनको प्रदान कर देता है तथा उससे उन्हें बचा लेता है तथा आख़िरत का सीधा मार्ग दर्शा देने का अर्थ यह है कि नरक की दुखद यातनाओं से बचाकर स्वर्ग में प्रवेश देता है तथा वहाँ अपने उपकार तथा साक्षात दर्शन भी प्रदान करेगा ।

السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيمٍ ﴿٥٥﴾

आ जाये अथवा उनके निकट उस दिन का प्रकोप आ जाये जो भलाई से शून्य है ।[1]

الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٥٦﴾

(५६) उस दिन केवल अल्लाह ही का राज होगा,[2] वही उनके बीच निर्णय करेगा। ईमान तथा सत्कर्मी तो सुखों से भरपूर स्वर्ग में होंगे।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥٧﴾

(५७) तथा जिन लोगों ने कुफ़्र किया तथा हमारी आयतों को झुठलाया, उनके लिए अपमानकारी यातनायें हैं।

---

[1] يوم عقيم (बाँझ दिन) से तात्पर्य क़ियामत का दिन है। इसे बाँझ इसलिए कहा गया है कि इस दिन के पश्चात कोई दिन नहीं होगा, जिस प्रकार बाँझ उसको कहा जाता जिसके कोई सन्तान न हो। अथवा इसलिए कि काफ़िरों के लिए उस दिन कोई दया नहीं होगी, अर्थात उनके लिए भलाई से शून्य होगा। जिस प्रकार तीव्र गति की हवाओं को जो प्रकोप के रूप में आती रही हैं 'बाँझ वायु' कहा गया है।

﴿إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ﴾

"जब हमने उन पर बाँझ हवा भेजी।" (सूर: *अज़्ज़ारियात*-४१)

अर्थात ऐसी हवा जिसमें न कोई भलाई थी न वर्षा की शुभसूचना।

[2]अर्थात दुनिया में तो अस्थाई रूप से उपहार स्वरूप अथवा परीक्षार्थ लोगों को भी शासन तथा अधिकार तथा अधिपत्य प्राप्त हो जाता है। परन्तु आख़िरत में किसी के पास कोई राज्य तथा अधिकार नहीं होगा, केवल एक अल्लाह का राज्य तथा उसका शासन होगा, उसी का पूर्ण अधिकार प्रभुत्व होगा।

﴿الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَٰنِ ۚ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا﴾

"राज्य उस दिन सिद्ध है दयालु के लिए तथा यह दिन काफ़िरों के लिए अत्यधिक भारी होगा।" (सूर: *अल-फ़ुरक़ान*-२६)

﴿لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ﴾

(अल्लाह तआला पूछेगा) "आज किस का राज्य है ?"

(फिर स्वयं उत्तर देगा) "एक अल्लाह प्रभावी का।"(सूर: *अल-मोमिन*-१६)

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा जिन्होंने अल्लाह के मार्ग में देश छोड़ा फिर वे शहीद कर दिये गये अथवा अपनी मृत्यु से मर गये[1] अल्लाह (तआला) उन्हें उत्तम जीविका प्रदान करेगा[2] तथा अवश्य अल्लाह (तआला) सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।[3]

لَيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾

(५९) उन्हें अल्लाह (तआला) ऐसे स्थान पर पहुँचायेगा कि वे उससे प्रसन्न हो जायेंगे।[4] नि:संदेह अल्लाह (तआला) जानने वाला तथा धैर्यवान है।[5]

ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ

(६०) बात यही है,[6] तथा जिसने बदला लिया उसी के समान जो उसके साथ किया गया था फिर यदि उसके साथ अति की जाये तो

---

[1]अर्थात उसी हिजरत की परस्थिति में मृत्यु हो गयी अथवा शहीद हो गये।

[2]अर्थात स्वर्ग के सुख जो न समाप्त होंगे न नष्ट।

[3]क्योंकि वह बिना हिसाब के, बिना अधिकार मांगे तथा बिना प्रश्न किये प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त मनुष्य जो एक-दूसरे को देते हैं, तो वह उसी के दिये हुए में से देते हैं, इसलिए मूल जीविका प्रदान करने वाला वही है।

[4]क्योंकि स्वर्ग के सुख ऐसे होंगे «مالا عين رأت، ولا أذن سمعت، ولا خطر على قلب بشر» "जिन्हें आज तक किसी आँख ने न देखा, न किसी कान ने सुना। तथा देखना सुनना तो दूर की बात, किसी व्यक्ति के मन में उनका विचार तक नही आया।" भला ऐसे सुखों से भरपूर स्वर्ग को प्राप्त करके कौन प्रसन्न नहीं होगा ?

[5] عليم वह पुण्य के कार्य करने वालों के पद तथा उनकी श्रेणियों को भली प्रकार से जानता है। कुफ्र तथा शिर्क करने वालों के अपराधों तथा अवहेलना को देखता है, परन्तु उनको तुरन्त नहीं पकड़ता।

[6]अर्थात यह कि महाजिरों को विशेष रूप से शहादत अथवा प्राकृतिक मृत्यु पर हमने जो वादा किया है, वह अवश्य पूरा होगा।

لَيَنصُرَنَّهُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ⑥٠

निःसंदेह अल्लाह (तआला) स्वयं उसकी सहायता करेगा ।[1] निःसंदेह अल्लाह (तआला) छोड़ देने वाला तथा क्षमा करने वाला है ।[2]

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ⑥١

(६१) यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में प्रवेश कराता है तथा दिन को रात में ले जाता है ।[3] तथा निःसंदेह अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है ।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ

(६२) यह सब इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है[4] तथा उसके अतिरिक्त जिसे भी यह पुकारते

---

[1] عقوبت उस दण्ड अथवा बदले को कहते हैं, जो किसी कर्म का बदला हो । अर्थ यह है कि किसी ने किसी के साथ ज़्यादती की हो तो जिससे ज़्यादती की गयी है, उसे ज़्यादती के समान बदला लेने का अधिकार है परन्तु बदला लेने के पश्चात, जबकि अत्याचारी तथा नृशंसित दोनों समान हो चुके हों, अत्याचारी नृशंसित पर पुनः अत्याचार करे तो अल्लाह तआला उस पीड़ित की अवश्य सहायता करेगा । अर्थात यह संदेह न हो कि पीड़ित ने क्षमा करने के बजाय बदला लेकर त्रुटि पूर्ण कार्य किया है, नहीं, बल्कि उसकी भी आज्ञा अल्लाह ने दी है, इसलिए भविष्य में भी वह अल्लाह की सहायता का अधिकारी रहेगा ।

[2]इसमें क्षमा कर देने की पुनः शिक्षा दी गयी है कि अल्लाह क्षमा करने वाला है, तुम भी क्षमा से काम लो । एक दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि बदला लेने में जितना अत्याचारी का अत्याचार होगा उतना अत्याचार किया जायेगा, इसकी आज्ञा चूँकि अल्लाह की ओर से है, इसलिए इस पर पकड़ नहीं होगी, बल्कि वह क्षम्य है । वरन इसे अत्याचार तथा बुराई उसके समरूप होने के कारण कहा जाता है । वरन् प्रतिशोध अथवा बदला मूलतः अत्याचार अथवा त्रुटि है ही नहीं ।

[3]अर्थात जो अल्लाह इस प्रकार कार्य करने का सामर्थ्य रखता है, वह इस बात का भी सामर्थ्य रखता है कि उसके जिन भक्तों पर अत्याचार किया जाये उनका बदला वह अत्याचारियों से ले ।

[4]इसलिए कि उसका धर्म सत्य है, उसकी इबादत सत्य है, उसका वचन सत्य है, उसका अपने मित्रों की उनके शत्रुओं के अपेक्षा सहायता करना सत्य है, वह अल्लाह महिमावान स्वयं में, अपने गुणों में, तथा अपने कर्मों में सत्य है ।

هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾

हैं वे असत्य हैं तथा नि:संदेह अल्लाह (तआला) सर्वोच्च महिमा वाला है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۡ فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۗ إِنَّ اللّٰهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿٦٣﴾

(६३) क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) आकाश से पानी बरसाता है, तो धरती हरी-भरी हो जाती है। वस्तुत: अल्लाह (तआला) कल्याणकारी तथा जानने वाला है।[1]

لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦٤﴾

(६४) आकाशों तथा धरती में जो कुछ है उसी का है[2] तथा नि:संदेह अल्लाह वही है निस्पृह प्रशंसाओं वाला।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۗ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا

(६५) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने धरती की सभी वस्तुएँ तुम्हारे वश में कर दी हैं।[3] तथा उसके आदेश से समुद्र में चलती हुई नावें भी। वही आकाश को थामे हुए है कि धरती पर उसके आदेश के बिना गिर न पड़े,[4]

---

[1] لطيف (सूक्ष्मदर्शी) है, उसका ज्ञान प्रत्येक छोटी-बड़ी वस्तु को अपने परिधि में घेरे हुए है, अथवा दया करने वाला है अर्थात अपने भक्तों को जीविका पहुँचाने में दया तथा कृपा से काम लेता है। خبير वह उन बातों से सूचित है जिनमें उसके भक्तों का हित तथा सुधार है अथवा उनकी आवश्यकताओं एवं आकाँक्षाओं से अवगत है।

[2]जन्म के आधार पर भी, राज्य के आधार पर भी एवं अधिकार में भी। इसलिए सम्पूर्ण सृष्टि उसके अधीन है, वह किसी के अधीन नहीं। क्योंकि वह प्रत्येक से निस्पृह है अर्थात उसे किसी भी वस्तु अथवा अन्य की आवश्यकता नहीं है। तथा जो शक्ति सभी गुणों से युक्त तथा अधिकारों का स्रोत हो, प्रत्येक परस्थिति में प्रशंसा के योग्य भी वही है।

[3]उदाहरणत: पशु, नदियाँ, वृक्ष तथा अनगिनत वस्तुयें, जिनके लाभ मनुष्य प्राप्त कर रहा तथा स्वाद ले रहा है।

[4]अर्थात यदि वह चाहे तो आकाश धरती पर गिर पड़े, जिससे धरती पर उपस्थित प्रत्येक वस्तु ध्वस्त हो जाये। हाँ, क़ियामत के दिन उसकी इच्छानुसार आकाश भी टूट-फूट का शिकार हो जायेगा।

بِإِذْنِهٖ ۗ إِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾

निःसंदेह अल्लाह (तआला) लोगों पर विनम्र तथा दयालु है ।[1]

وَهُوَ الَّذِيْٓ أَحْيَاكُمْ ۫ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۗ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾

(६६) तथा उसी ने तुम्हें जीवित किया है, फिर वही तुम्हें मारेगा, फिर वही तुम्हें जीवित करेगा, निःसंदेह मनुष्य वस्तुतः कृतघ्न है ।[2]

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلٰى رَبِّكَ ۗ إِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٧﴾

(६७) प्रत्येक सम्प्रदाय के लिए हमने इबादत की एक विधि निर्धारित कर दी है, जिसका वह पालन करने वाले हैं,[3] तो उन्हें आप से इस सम्बन्ध में विवाद नहीं करना चाहिए ।[4] आप अपने प्रभु की ओर लोगों को बुलायें, निःसंदेह आप सीधे सत्यमार्ग पर ही हैं ।[5]

---

[1]इसीलिए उसने वर्णित वस्तुओं को मनुष्य के अधीन कर दिया है तथा आकाश को भी उन पर गिरने नहीं देता । अधीन करने का अर्थ है कि उन सभी वस्तुओं से लाभ उसके लिए सम्भव अथवा सरल कर दिया गया है ।

[2]यह जातिवाचक संज्ञा के रूप में है । कुछ लोगों का इस कृतघ्नता से निकल जाना इसके प्रतिकूल नहीं । क्योंकि अधिकतम मानव जाति में यह कुफ़्र तथा पाप पाया जाता है ।

[3]अर्थात प्रत्येक युग में हमने लोगों के लिए धार्मिक नियम निर्धारित किये जो कुछ बातों में एक-दूसरे से भिन्न भी होते, जिस प्रकार तौरात मूसा के सम्प्रदाय के लिए, इंजील ईसा के सम्प्रदाय के लिए धार्मिक विधान था, तथा अब क़ुरआन मुसलमानों के लिए धर्म विधान तथा जीवन विधान है ।

[4]अर्थात अल्लाह ने जो आप को धर्म तथा धार्मिक नियम प्रदान किया है, वह भी वर्णित नियमों के आधार पर है, उन प्राचीन धार्मिक नियम वालों को चाहिए कि अब आपके धार्मिक नियमों पर ईमान ले आयें, न कि इस मामले में आप से झगड़ें ।

[5]अर्थात आप उनके झगड़ों की चिन्ता न करें, बल्कि उनको अपने प्रभु की ओर आमन्त्रित करते रहें, क्योंकि अब सीधे मार्ग पर आप ही अग्रसर हैं । अर्थात सभी प्राचीन धार्मिक विधान निरस्त कर दिये गये ।

(६८) तथा फिर भी यदि ये लोग आप से उलझने लगें तो आप कह दें कि तुम्हारे कर्मों से अल्लाह भली-भाँति अवगत है।

وَإِنْ جَٰدَلُوكَ فَقُلِ ٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾

(६९) तुम्हारे सभी के मतभेद का निर्णय क़ियामत के दिन अल्लाह (तआला) स्वयं करेगा।[1]

ٱللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾

(७०) क्या आपने नहीं जाना कि आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु अल्लाह के ज्ञान में है। यह सब लिखी हुई किताब में सुरक्षित है। अल्लाह (तआला) के लिए यह कार्य अत्यन्त सरल है।[2]

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِى ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ فِى كِتَٰبٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

---

[1]अर्थात वर्णन तथा तर्कों के प्रकट होने के पश्चात भी, यदि ये विरोध तथा विवाद से न रूकें तो इनका मामला अल्लाह के हवाले कर दें तथा कह दें कि अल्लाह तआला ही तुम्हारे मतभेद का निर्णय क़ियामत के दिन कर देगा, तो उस दिन स्पष्ट हो जायेगा कि सत्य क्या है तथा असत्य क्या है ? क्योंकि वह उसके अनुसार सभी को बदला देगा।

[2]इसमें अल्लाह तआला ने अपने सम्पूर्ण ज्ञान तथा सृष्टि को घेर रखने का वर्णन किया है। अर्थात उसकी सृष्टि को जो कुछ करना था, उसको इसका ज्ञान पूर्व से ही था, वह उनको जानता था। अत: उसने अपने ज्ञान से यह बातें पूर्व ही से लिख दीं। तथा लोगों को यह बात चाहे कितनी ही कठिन लगे, अल्लाह के लिए यह अत्यन्त सरल है। यह वही भाग्य की समस्या है जिस पर ईमान रखना आवश्यक है। जिसे हदीस में इस प्रकार वर्णन किया गया है, "अल्लाह तआला ने आकाश तथा धरती की उत्पत्ति से पचास हज़ार वर्ष पूर्व, जबकि उसका अर्श पानी पर था, सृष्टि के भाग्य लिख दिये थे।" (सहीह मुस्लिम किताबुल क़द्र, बाब हिजाज आदम व मूसा) तथा सुनन के कथन में हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम क़लम पैदा किया, तथा उससे कहा लिख , उसने कहा क्या लिखूं ? अल्लाह तआला ने कहा जो कुछ होने वाला है, सब लिख दे। अत: उसने अल्लाह के आदेश से क़ियामत तक जो कुछ होने वाला था, सब लिख दिया।" (अबू दाऊद किताबुस सुन्न: बाबुन फ़िल क़द्र, तिर्मिज़ी अबवाबुल क़द्र तफ़सीर सूर: नून, मुसनद अहमद भाग ५\३१७)

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُم بِهِ عِلْمٌ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ﴿٧١﴾

(७१) तथा ये अल्लाह (तआला) के सिवाय उन्हें पूज रहे हैं जिसका कोई दैवी प्रमाण नहीं तथा न वे स्वयं ही इसका कोई ज्ञान रखते हैं, अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾

(७२) तथा जब उनके समक्ष हमारे कथन की खुली आयतों का पाठ किया जाता है, तो आप काफ़िरों के मुख पर अप्रसन्नता के भाव स्पष्ट पहचान लेते हैं। वे तो निकट होते हैं कि हमारी आयतों के सुनाने वाले पर आक्रामण कर बैठें।[1] कह दीजिए क्या मैं तुम्हें इससे भी अधिक अशुभ सूचना दूँ। वह अग्नि है, जिसका वादा अल्लाह ने काफ़िरों से कर रखा है,[2] तथा वह अत्यन्त बुरा स्थान है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ

(७३) हे लोगो ! एक उदाहरण दिया जा रहा है, तनिक ध्यान से सुनो। अल्लाह के अतिरिक्त तुम जिन-जिन को पुकारते रहे हो, वे एक मक्खी तो पैदा नहीं कर सकते यदि सारे के

---

[1]अपने हाथों से हस्तक्षेप कर के अथवा अपशब्द से। अर्थात मूर्तिपूजक अथवा विपथ लोगों के लिए अल्लाह की एकता तथा रिसालत एवं क़ियामत का वर्णन असहनीय होता है, जिसका प्रदर्शन उनके चेहरे से तथा कई बार हाथ तथा मुख से भी होता है। यही हाल आजकल के धर्म में नई बात सुनाने वाले तथा भटके हुए गुटों का है, जब उनकी गुमराही क़ुरआन तथा हदीस के तर्क द्वारा प्रकट की जाती है, तो उनका भी व्यवहार क़ुरआन की आयतों तथा हदीस के तर्कों के समक्ष ऐसा ही होता है जिसका स्पष्टीकरण इस आयत में किया गया है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात अभी तो अल्लाह की आयतें को सुनकर तुम्हारे मुख का रंग बदल जाता है। परन्तु एक समय आयेगा कि यदि तुमने अपने इस व्यवहार से क्षमा नहीं माँगी तो इससे कहीं अधिक बुरी अवस्था में तुम्हें जाना पड़ेगा, तथा वह है नरक की अग्नि में जलना, जिसका वादा अल्लाह ने काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों से कर रखा है।

وَإِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿٧٣﴾

सारे एकत्रित हो जायें[1] बल्कि यदि मक्खी उन से कोई वस्तु ले भागे, तो यह तो उसे भी उससे छीन नहीं सकते,[2] अत्यन्त निर्बल है माँगने वाला तथा अत्यन्त क्षीण है जिससे माँगा जा रहा है।[3]

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ

(७४) उन्होंने अल्लाह की महिमा के अनुसार उस का महत्व जाना ही नहीं,[4] नि:संदेह

---

[1]अर्थात ये असत्य देवता जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त सहायता के लिए पुकारते हो, ये सारे के सारे एकत्रित होकर एक तुच्छ सा जीव मक्खी बनाना चाहें तो नहीं बना सकते। तो इसके उपरान्त भी तुम उनको अपना कष्ट निवारक समझो, तो तुम्हारी बुद्धि पर शोक है। इससे यह ज्ञात हुआ कि अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी इबादत की जाती रही है, वह पत्थर की निर्जीव मूर्तियाँ ही नहीं होती थीं (जैसाकि आजकल क़ब्र पूजा का औचित्य बताने वाले लोग सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं) बल्कि ये बुद्धि एवं समझ रखने वाली वस्तुयें भी थीं। अर्थात अल्लाह के पुण्य कार्य करने वाले भक्त भी थे, जिनकी मृत्यु के पश्चात लोगों ने उनको अल्लाह का साझीदार बना लिया, इसीलिए अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि ये सभी सम्मिलित भी हो जायें, तो एक तुच्छ सी वस्तु मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते मात्र पत्थर की मूर्तियों को यह चैलेंज नहीं दिया जा सकता।

[2]यह उनकी विवशता तथा लाचारी का अधिक प्रदर्शन है कि पैदा करना तो दूर की बात, यह तो मक्खी को पकड़कर उसके मुख से वह वस्तु भी नहीं ले सकते जो वह उनसे छीन कर ले जाये।

[3]प्रार्थी (इच्छुक) से तात्पर्य स्वकृत देवता तथा वाँछित से तात्पर्य मक्खी अथवा कुछ के निकट प्रार्थी से पुजारी तथा वांछित से उसके देवता तात्पर्य हैं। हदीस क़ुदसी में असत्य देवताओं की शक्तिहीनता का वर्णन इन शब्दों में है। अल्लाह तआला फ़रमाता है : "उससे अधिक अत्याचारी कौन हो जो मेरी तरह पैदा करना चाहता है ? यदि किसी में वास्तव में सामर्थ्य है, तो वह एक कण अथवा एक जूँ ही पैदा करके दिखा दे।" (सहीह बुख़ारी किताबुल लिबास बाब ला तदख़ोलुल मलायेका बैतन फ़ीहे कलबुन वला सूरतुन)

[4]यही कारण है कि लोग उसके निस्सहाय सृष्टि को उसका समतुल्य एवं साझीदार बना लेते हैं। यदि उनको अल्लाह तआला की महिमा, उच्चता, सामर्थ्य तथा शक्ति एवं उसकी असीमता का ठीक-ठीक अनुमान तथा ज्ञान हो तो वह कभी उसके प्रभुत्व में किसी को सम्मिलित न करें।

إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٤﴾

अल्लाह (तआला) अत्यन्त शक्तिशाली तथा प्रभावशाली है।

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٧٥﴾

(७५) फ़रिश्तों में से तथा मनुष्यों में से रसूल को अल्लाह ही चयन कर लेता है।[1] नि:संदेह अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है।[2]

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٧٦﴾

(७६) वह भली-भाँति जानता है जो कुछ उनके आगे है तथा जो कुछ उनके पीछे है, तथा अल्लाह ही की ओर सब काम लौटाये जाते हैं।[3]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا

(७७) हे ईमानवालो ! रूकूअ, सजदा करते

---

[1] رُسُلًا रसूल (अवतरित, भेजा हुआ संदेशवाहक) का बहुवचन है। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से भी वाहन का अर्थात संदेशवाहन का काम लिया है जैसे आदरणीय जिब्रील को अपनी प्रकाशना के लिए चुना कि वे रसूलों के पास प्रकाशना पहुँचायें। अथवा प्रकोप लेकर समुदायों के पास जायें तथा मनुष्यों में से जिन्हें चाहा रिसालत के लिए चुन लिया तथा उन्हें लोगों के मार्गदर्शन तथा शिक्षा देने के लिए नियुक्त किया। सभी अल्लाह के भक्त थे, यद्यपि चुने हुए थे, परन्तु किस लिए ? प्रभुत्व के अधिकार में साझीदार बनाने के लिए ? जिस प्रकार कुछ लोगों ने उनको अल्लाह का साझी बना लिया है। नहीं, बल्कि केवल अल्लाह का संदेश पहुँचाने के लिए।

[2] वह भक्तों के कथन सुनने वाला है तथा देखने वाला है अर्थात यह जानता है कि रिसालत के योग्य कौन है ? जैसे अन्य स्थान पर फरमाया :

﴿اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ﴾

"उस स्थान को तो अल्लाह ही अधिक जानता है कि कहाँ वह अपना दूतत्व रखे।" (सूर: अल-अनआम-१२४)

[3] जब सभी बातों का केन्द्र बिन्दु अल्लाह ही है, तो मनुष्य उसकी अवहेलना करके कहाँ जा सकता है तथा उसकी यातना से किस प्रकार बच सकता है ? क्या उसके लिए यह लाभकारी नहीं कि वह उसकी अधीनता तथा आज्ञापालन का मार्ग अपना कर उसकी प्रसन्नता प्राप्त करे ? अत: अगली आयत में उसका स्पष्टीकरण हो रहा है।

وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

रहो,[1] तथा अपने प्रभु की इबादत में लगे रहो तथा पुण्य के कार्य करते रहो ताकि तुम सफल हो जाओ ।[2]

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ مِلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّاكُمُ

(७८) तथा अल्लाह के मार्ग में वैसा ही धर्मयुद्ध करो जैसा धर्मयुद्ध का औचित्य है,[3] उसी ने तुम्हें निर्वाचित किया है तथा तुम पर धर्म के विषय में कोई कमी नहीं की,[4] धर्म अपने पिता[5] इब्राहीम का (स्थापित रखो) ।

---

[1]अर्थात उस नमाज के प्रतिबद्ध रहो जो धार्मिक नियम में निर्धारित की गयी है । आगे इबादत का आदेश आ रहा है जिसमें नमाज़ सम्मिलित थी, परन्तु इसकी विशेषता तथा महत्व के कारण इसका विशेष रूप से आदेश दिया ।

[2]अर्थात सफलता अल्लाह की इबादत तथा आज्ञा पालन में अर्थात सत्कर्म में ही है, न कि अल्लाह की इबादत तथा आज्ञापालन से प्राण छुड़ाकर मात्र भौतिक साधन एवं वस्तुओं की प्राप्ति तथा बाहुल्य में, जैसाकि अधिकतर लोग समझते हैं ।

[3]इस धर्मयुद्ध से तात्पर्य कुछ ने वह महा धर्मयुद्ध लिया है जो अल्लाह के नाम के प्रसार के लिए काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों से किया जाता है तथा कुछ ने अल्लाह के आदेशों के पालन को कहा है क्योंकि इसमें इंद्रियों तथा शैतान का सामना करना पड़ता है । तथा कुछ ने प्रत्येक वह प्रयत्न लिया है जो सत्य एवं सत्यता को प्रभावशाली बनाने, असत्य का दमन करने के लिए करना पड़ता है ।

[4]अर्थात ऐसा आदेश नहीं दिया जिसे मानव प्राण सहन न कर सके (वरन् थोड़ी बहुत कठिनाई तो प्रत्येक कार्य में उठानी पड़ती है) बल्कि पूर्व के धार्मिक नियमों के कुछ कठोर आदेश निरस्त कर दिये । इसके अतिरिक्त मुसलमानों के लिए बहुत सी छूट प्रदान कीं, जो पूर्व के धार्मिक नियमों में नहीं थीं ।

[5]अरब इस्माईल की सन्तान में से थे, इस आधार पर आदरणीय इब्राहीम अरबों के पिता थे तथा गैर अरब भी आदरणीय इब्राहीम की एक महान व्यक्ति के रूप में आदर करते थे, जिस प्रकार पुत्र पिता का करते हैं, इसलिए वह सभी लोगों के पिता थे, इसके अतिरिक्त मुसलमानों के पैग़म्बर के (अरब होने के नाते) आदरणीय इब्राहीम पिता थे, इसलिए मुसलमानों के भी पिता हुए । इसलिए कहा गया कि यह धर्म इस्लाम जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए निर्वाचित किया है, तुम्हारे पिता इब्राहीम का धर्म है, उसी का अनुसरण करो ।

الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۚۖ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٧٨﴾

उसी (अल्लाह)[1] ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है। इस (क़ुरआन) से पूर्व तथा इसमें भी ताकि पैग़म्बर तुम पर साक्षी हो जाये तथा तुम सभी लोगों के साक्षी बन जाओ,[2] तो तुम्हें चाहिए कि नमाज़ें स्थापित करो तथा ज़कात (धर्मदान) अदा करते रहो तथा अल्लाह को दृढ़ता से पकड़ लो, वही तुम्हारा संरक्षक तथा स्वामी है। तथा कितना श्रेष्ठ स्वामी तथा कितना उत्तम सहायता करने वाला है।

---

[1] هو सर्वनाम को कुछ ने इब्राहीम की ओर फेरा है अर्थात क़ुरआन के अवतरण से पूर्व तुम्हारा नाम मुस्लिम भी आदरणीय इब्राहीम ने ही रखा था तथा कुछ ने अल्लाह की ओर फेरा है अर्थात उसने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा है।

[2] यह गवाही क़ियामत के दिन होगी जैसाकि हदीस में है। (देखिये सूरः बक़रः आयत १४३ की व्याख्या)